



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 286]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 28, 1995/आषाढ़ 7, 1917

No. 286]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 28, 1995/ASADHA 7, 1917

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)
(बीमा प्रभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 जून, 1995

सा.का.नि. 525(अ):—केन्द्रीय सरकार, जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 (1956 का 31) की धारा 48 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—

अध्याय—1

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ:—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन नियम, 1995 है।

(2) इन नियमों में, अभिव्यक्त रूप से अन्यथा उपबंधित के सिवाय ये नियम 1 नवम्बर, 1993 से प्रवृत्त हुए समझे जायेंगे।

2. परिभाषाएं:—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:—

(क) “अधिनियम” से जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 (1956 का 31) अभिप्रेत है;

(ख) “बीमांकक” का वही अर्थ होगा जो बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 2 के खंड (1) में नियत किया गया है;

(ग) “परिशिष्ट” से इन नियमों में उपाबद्ध परिशिष्ट अभिप्रेत है;

(घ) “श्रीसत उपलब्धियों” से किसी कर्मचारी द्वारा अपनी सेवा के अंतिम दस मास के दौरान लिये गये वेतन का श्रीसत अभिप्रेत है;

(ङ) “संतान” से कर्मचारी की संतान अभिप्रेत है जो, यदि वह पुत्र है तो 25 वर्ष से कम आयु का हो, और यदि पुत्री है तो अविवाहिता हो और पच्चीस वर्ष से कम आयु की हो और ‘संतान’ पद का अर्थ तदनुसार लगाया जायेगा;

(च) “सक्षम प्राधिकारी” से निम्नलिखित अभिप्रेत है:—

(1) सहायक प्रशासनिक अधिकारी काइर के कर्मचारियों और वर्ग 2, वर्ग 3 और वर्ग 6 के कर्मचारियों के संबंध में निगम के क्षेत्र का भारमाधक, क्षेत्रीय प्रबन्धक; और

(2) अन्य किसी मामले में, इन नियमों के परिशिष्ट 1 में विनिर्दिष्ट नियुक्ति प्राधिकारी;

(छ) “अंशदान” से निगम द्वारा कर्मचारी की ओर से निधि में जमा की गई राशि अभिप्रेत है, किन्तु इसमें ध्याज के रूप में जमा की गई कोई रकम शामिल नहीं होगी;

(ज) “निगम” से जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 (1956 का 31) की धारा 3 के अधीन स्थापित भारतीय जीवन बीमा निगम अभिप्रेत है;

(झ) “सेवानिवृत्ति की तारीख” से अभिप्रेत है उस मास का अंतिम दिन, जिसको कोई कर्मचारी अधिवर्षिता की ग्राह्य प्राप्त करना है या वह तारीख, जिसको निगम द्वारा उसे सेवानिवृत्त किया जाता है या वह तारीख जिसको कर्मचारी स्वच्छता से सेवानिवृत्त होता है;

(ञ) “कर्मचारी” से निगम की सेवा में पूर्णकालिक कार्य के लिये स्थायी आधार पर नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है, और जो ऐसा विकल्प लेता है और इन नियमों द्वारा शासित होता है किन्तु ऐसा कर्मचारी सम्मिलित नहीं है जो इन नियमों के प्रारंभ होने से पूर्व सेवानिवृत्त हो गया था और जो अधिनियम के अधीन बनाये गये भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारिवृत्त) विनियम, 1960 के विनियम 76 के उपविनियम (2) के अनुसार ऑरियंटल गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की पेंशन निधि से पेंशन ले रहा हो, शामिल नहीं है;

(ट) किसी कर्मचारी के संबंध में “कुटुम्ब” से निम्नलिखित अभिप्रेत है,—

(1) पुरुष कर्मचारी के मामले में पत्नी और महिला कर्मचारी के मामले में पति;

(2) न्यायिक रूप से अलग हुआ/हुई पति या पत्नी, किन्तु यह अलगव जारकर्म के आधार पर मंजूर न हुआ हो और उत्तरजीवी व्यक्ति जारकर्म का दोषी न ठहराया गया हो;

(3) पुत्र और अविवाहिता पुत्री, जो 25 वर्ष का/की नहीं हुआ/हुई हो, इसमें कर्मचारी द्वारा सेवानिवृत्ति से पूर्व वैध रूप से दत्तक लिया पुत्र या पुत्री भी शामिल है;

(ठ) “विनीय वर्ष” से 1 अप्रैल से प्रारंभ होने वाला वर्ष अभिप्रेत है;

(ड) “निधि” से नियम 5 के अधीन गठित भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन निधि अभिप्रेत है;

(ढ) “अधिसूचित तारीख” से वह तारीख अभिप्रेत है, जिसको ये नियम राजपत्र में प्रकाशित हुए हों;

(ण) “वेतन” में सम्मिलित है,—

(क) ऐसे कर्मचारी के मामले में, जो 1 जनवरी, 1986 को या इसके पश्चात् किन्तु 1 नवम्बर, 1993 के पूर्व सेवानिवृत्त हुआ है या जिसकी मृत्यु हो गई है,—

(1) मूल वेतन जिसमें वृद्धि वृद्ध वेतनवृद्धियां यदि कोई हों, भी शामिल है; और

(2) भविष्य निधि में अंशदान करने और महंगाई भत्ते का संदाय करने के प्रयोजन के लिये गणना में लिये गये सभी भत्ते;

(ख) ऐसे कर्मचारी के संबंध में, जो 1 नवम्बर, 1993 को या इसके पश्चात् सेवानिवृत्त होता है या जिसकी सेवा में रहते हुए मृत्यु हो जाती है,—

(1) मूल वेतन जिसमें वृद्धि वृद्ध वेतनवृद्धियां यदि कोई हों, भी शामिल है; और

(2) भविष्य निधि में अंशदान करने और महंगाई भत्ते का संदाय करने के प्रयोजनों के लिये गणना में लिये जाने वाले सभी भत्ते; और

(3) नियत वैयक्तिक भत्ता, जो वेतनमान में अंतिम वेतनवृद्धि से अधिक नहीं होगा; और

(4) $1960 = 100$ शृंखला में औद्योगिक कर्मचारियों के लिये अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में सूचकांक संख्या 1148 तक संगणित महंगाई भत्ता;

(त) “पेंशन” में मूल वेतन और इन नियमों के अध्याय-6 में निर्दिष्ट अतिरिक्त पेंशन शामिल हैं;

(ध) “पेंशनभोगी” से वह कर्मचारी अभिप्रेत है जो इन नियमों के अधीन पेंशन पाने का पात्र है;

(व) “अर्हक सेवा” से ड्यूटी पर रहते हुए या अन्यथा की गई सेवा अभिप्रेत है जिसे इन नियमों के अधीन पेंशन के प्रयोजन के लिये गणना में लिया जायेगा;

(घ) “सेवानिवृत्ति” से अभिप्रेत है,—

(1) अधिनियम के अधीन बनाये गये भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारिवृत्त) विनियमन, 1960 के विनियम 19 के उप-विनियम (1) या उप-विनियम (2) या उप-विनियम (3) और भारतीय जीवन बीमा निगम वर्ग 3 और वर्ग 4 कर्मचारी (सेवा के निबंधन और शर्तों का पुनरीक्षण) नियम, 1985 के नियम 14 में अन्तर्निहित उपबंधों के अनुसार सेवानिवृत्ति;

(2) इन नियमों के नियम 31 में अन्तर्निहित उपबंधों के अनुसार स्वच्छिक सेवानिवृत्ति;—

(न) “सेवा नियमों” में सम्मिलित है—

(1) अधिनियम की धारा 48 के अधीन बनाये गये—

(i) भारतीय जीवन बीमा निगम श्रेणी 1 अधिकारी (सेवा के निबंधन और शर्तों का पुनरीक्षण) नियम, 1985;

(ii) भारतीय जीवन बीमा निगम वर्ग 3 और वर्ग 4 कर्मचारी (सेवा के निबंधन और शर्तों का पुनरीक्षण) नियम, 1985;

(iii) भारतीय जीवन बीमा निगम विकास अधिकारी (सेवा के निबंधन और शर्तों का पुनरीक्षण) नियम, 1986;

(प) "कर्मचारिवृन्द विनियम" से अभिप्रेत है, अधिनियम के अधीन बनाये गये भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारिवृन्द) विनियम, 1960;

(फ) "न्यास" से अभिप्रेत है नियम 5 के उपनियम (i) के अधीन गठित भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन निधि का न्यास;

(ज) "न्यासी" से अभिप्रेत है नियम 5 के अधीन गठित भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन निधि का न्यासी;

(भ) "भविष्य निधि का न्यासी" से अभिप्रेत है निगम की भविष्य निधि का न्यासी;

(म) इन नियमों में प्रयोग किये गये किन्तु अपरिभाषित सभी अन्य शब्दों और पदों, जिन्हें अधिनियम या सेवा नियमों का या कर्मचारिवृन्द विनियमों में परिभाषित किया गया है, का वही अर्थ होगा जो, यथास्थिति, अधिनियम, सेवा नियमों या कर्मचारिवृन्द विनियमों में उन्हें दिया गया है।

अध्याय—2

लागू होना और पात्रता

3. लागू होना—ये नियम ऐसे कर्मचारियों पर लागू होंगे जो—

(1) (क) पहली जनवरी, 1986 की या उसके पश्चात् निगम की सेवा में थे किन्तु पहली नवम्बर, 1993 से पूर्व सेवानिवृत्त हो गये थे; और

(ख) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिनों की अवधि के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करते हैं और

(ग) खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिनों की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन की अवधि के भीतर, भविष्य निधि में निगम के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम की उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर छह

प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें; या

(2) (क) पहली नवम्बर, 1993 या उसके पश्चात् परन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व सेवानिवृत्त हो गया है; और

(ख) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करता है; और

(ग) खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन की अवधि के भीतर भविष्य निधि में निगम के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम को उक्त रकम लौटाने तक उस रकम पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें;

(3) (क) अधिसूचित तारीख से पूर्व निगम की सेवा में है और अधिसूचित तारीख को या उसके पश्चात् निगम की सेवा में बने रहते हैं; और

(ख) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करते हैं;

(ग) भविष्य निधि न्यास को, निगम के संपूर्ण अंशदान को उस पर प्रोद्भूत ब्याज सहित नियम 5 के अधीन इस प्रयोजनार्थ गठित निधि के खाते में अन्तर्गत करने के लिये प्राधिकृत करे; या

(4) अधिसूचित तारीख को या उसके पश्चात् निगम की सेवा में पदग्रहण करे; और

(5) पहली नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् किसी भी समय निगम की सेवा में थे और जिसकी सेवा निवृत्ति के पश्चात् किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व मृत्यु हो गई थी, ऐसे कर्मचारियों के कुटुम्ब, उस तारीख से, जिसको वे यदि वे अपनी मृत्यु की तारीख तक जीवित रहते हैं तो, इन नियमों के अधीन पेंशन पाने के हकदार होते, उनकी मृत्यु की तारीख तक उन्हें संदेय पेंशन की रकम प्राप्त करने के हकदार होंगे, यदि मृत कर्मचारी का कुटुम्ब—

(क) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करते हैं; और

(ख) उपर्युक्त खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि में निगम के अंशदान की संपूर्ण रकम को उस पर प्रोद्भूत ब्याज के भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम को उक्त

रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर बाहर प्रतिशत की वार्षिक दर से अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर देते हैं; या

(6) पहली नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् निगम की सेवा में पद ग्रहण किया हो किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व निगम की सेवा में रहते हुए जिसकी मृत्यु हो गई हो, उनके कुटुम्ब इन नियमों के अधीन कुटुम्ब पेंशन के हकदार होंगे :

परन्तु यह कि ऐसे मृत कर्मचारी का कुटुम्ब अधिसूचित तारीख से एक सौ अस्सी दिन के भीतर भविष्य निधि में निगम के अंशदान, यदि कोई हो, की संपूर्ण रकम को उस पर प्रोद्भूत ब्याज और भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम को उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर बाहर प्रतिशत वार्षिक दर से अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर देता है :

परन्तु यह और भी कि ऐसे मृत कर्मचारी का कुटुम्ब पेंशन प्रदान करने के लिये लिखित में आवेदन करेगा; या

(7) पहली जनवरी, 1986 को या उसके पश्चात् किसी भी समय निगम की सेवा में थे और जिनकी 31 अक्टूबर, 1993 को या उससे पूर्व सेवा में रहते हुए उसकी मृत्यु हो गई हो या 31 अक्टूबर, 1993 को या इससे पूर्व सेवानिवृत्त हो चुके हों किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व मृत्यु हो गई हो, ऐसे मामले में ऐसे कर्मचारियों के कुटुम्ब इन नियमों के अधीन कुटुम्ब पेंशन के हकदार होंगे, यदि मृत कर्मचारी का कुटुम्ब,—

(क) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन के भीतर निधि का सदस्य बनने के विकल्प का लिखित रूप में प्रयोग करे;

(ख) उपर्युक्त खंड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि में निगम के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम को उस रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर छह प्रतिशत वार्षिक दर से अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें; या

(8) 31 अक्टूबर, 1993 को या इससे पूर्व निगम की सेवा में पदग्रहण किया हो और जिसकी पहली नवम्बर, 1993 को या इसके बाद किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व सेवा में रहते हुए मृत्यु हो गई हो, ऐसे मामले में,

ऐसे कर्मचारियों के कुटुम्ब इन नियमों के अधीन कुटुम्ब पेंशन के हकदार होंगे, यदि मृत कर्मचारी का कुटुम्ब,—

(क) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर निधि में निगम के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम को उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर बाहर प्रतिशत वार्षिक दर से अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें ।

(ख) उपर्युक्त खंड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि में निगम के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से निगम को उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर बाहर प्रतिशत वार्षिक दर से अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें ।

4. भविष्य निधि में अंशदान करने का विकल्प :—

(1) नियम 3 के उपनियम (4) में किसी बात के होते हुए भी, ऐसे कर्मचारी, जो अधिसूचित तारीख को या इसके पश्चात् 35 वर्ष या इससे अधिक की आयु में निगम की सेवा में पदग्रहण करता है, अपनी नियुक्ति की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के भीतर पेंशन के अपने अधिकार छोड़ने का चयन करता है तो ये नियम उस पर लागू नहीं होंगे।

(2) उपनियम (1) और नियम 3 में निर्दिष्ट विकल्प का एक बार प्रयोग किए जाने पर वह अंतिम होगा।

अध्याय—3

निधि

5. निधि का गठन :—(1) निगम, अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन के भीतर प्रतिसंहरणीय न्यास के अधीन भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन निधि के नाम से एक निधि का गठन करेगा।

(2) निधि में, कर्मचारी या उसके कुटुम्ब को इन नियमों के अनुसार पेंशन या कुटुम्ब पेंशन के भुगतान के एकमात्र प्रयोजन के लिए उपबन्ध होगा।

(3) निगम निधि का अंशदाता होगा और यह सुनिश्चित करेगा कि निधि में पर्याप्त धनराशि की व्यवस्था रहे ताकि न्यासी इन नियमों के अधीन हिताधिकारियों को संदाय कर सकें।

6. भविष्य निधि न्यास का दायित्व :—भविष्य निधि न्यास, निधि के गठन के तुरंत पश्चात् प्रत्येक कर्मचारी के संबंध में भविष्य निधि में निगम के अंशदान की संबंधित रकम, ऐसे अंतरण की तारीख तक उस पर प्रोद्भूत ब्याज की रकम सहित, भारतीय जीवन बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन निधि में जमा की जाएगी।

7. निधि की संरचना :—निधि में निम्नलिखित होगा, अर्थात्—

(क) कर्मचारी के वेतन पर प्रतिमास दस प्रतिशत की दर से निगम द्वारा अंशदान;

स्पष्टीकरण

इस नियम के प्रयोजन के लिए "वेतन" में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:—

- (i) मूल वेतन,
- (ii) महंगाई भत्ते से भिन्न ऐसे भत्ते जिन्हें भविष्य निधि में अंशदान करने और महंगाई भत्ते के संदाय के प्रयोजनों के लिए गणना में लिया जाता है,
- (iii) मूल वेतन पर संदेय महंगाई भत्ता और उपर्युक्त खंड (ii) में विनिर्दिष्ट भत्ते, औद्योगिक कर्मचारियों के लिए 1960=100 अंशला में अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की त्रैमासिक औसत के आधार पर सूचकांक संख्या 1148 तक; और
- (iv) उस सीमा तक भत्ते, जिस सीमा तक वे भविष्य निधि, मकान किराया भत्ता, उपदान और पदोन्नति पर वेतन के पुनर्नियतन के लिए गणना में लिए जाते हैं;

परन्तु यह कि निगम, कर्मचारियों के भविष्य निधि खाते में कोई अंशदान नहीं करेगा।

- (ख) कर्मचारियों की दशा में भविष्य निधि में निगम का संचित अंशदान और ऐसे अंतरण की तारीख तक उस पर प्रोद्भूत व्याज की रकम;
- (ग) ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जो इन नियमों के प्रकाशन की तारीख से पूर्व सेवानिवृत्त हो गए हों, किन्तु जिन्होंने इन नियमों में अंतर्विष्ट उपबंधों के अनुसार पेंशन का विकल्प लिया हो, वापस किए गए व्याज सहित निगम के अंशदान की रकम।
- (घ) निधि धनराशि से खरीदी गई वापिकी या प्रतिभूतियों पर किया गया निवेश और उस पर व्याज।
- (ङ) निधि की पूंजी आस्तियों से उद्भूत किसी पूंजी अभिलाष की रकम।
- (च) इन नियमों के नियम II में अंतर्विष्ट उपबंधों के अनुसार निगम द्वारा किया गया अतिरिक्त वार्षिक अंशदान।
- (छ) निधि में जमा की गई रकमों के निवेश से कोई आय।

(ज) मृत कर्मचारी के कुटुम्ब द्वारा वापस किए गए व्याज सहित निगम के अंशदान से मिलकर बनी रकम।

8. न्यासी बोर्ड :—(1) न्यासी बोर्ड, निगम द्वारा नियुक्त किए जाने वाले ऐसे व्यक्तियों से मिलकर बनेगा जिनकी संख्या, निगम द्वारा यथा अवधारित तीन से कम और नौ से अधिक नहीं होगी।

(2) न्यासियों की नियुक्ति का अधिकार निगम में निहित होगा और ऐसी सभी नियुक्तियां निवृत्त रूप से की जाएंगी।

(3) निगम, एक न्यासी को न्यासी बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में नामनिर्देशित करेगा। निगम किसी एक न्यासी को अनुकल्पी अध्यक्ष के रूप में भी नामनिर्देशित करेगा, जो न्यासी बोर्ड के अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्ष के रूप में कार्य करेगा।

9. न्यासी द्वारा निगम के निर्देशों का पालन किया जाएगा :

न्यासी निधि के समुचित कार्यकरण के लिए निगम द्वारा दिए गए सभी निर्देशों का पालन करेंगे।

10. निधि की लेखा बहियां—

- (1) निधि के लेखाओं में निधि के संबंध में सभी वित्तीय संव्यवहारों के विवरण निगम द्वारा यथाविनिर्दिष्ट रीति में अन्तर्विष्ट होंगे।
- (2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति से एक सौ अस्सी दिन के भीतर न्यास, न्यास की आस्तियों और दायित्वों का सामान्य लेखा दर्शाने हुए, न्यास का वित्तीय विवरण तैयार करेगा और उसकी एक प्रति निगम को अर्पित करेगा।
- (3) निधि के लेखाओं की अधिनियम की धारा 25 के उपबंधों के अनुसार लेखा परीक्षा की जाएगी।

11. निधि की बीमांकित जांच पड़ताल :—

निगम प्रत्येक वित्तीय वर्ष में 31 मार्च को निधि की वित्तीय स्थिति की किसी बीमांकित द्वारा जांच पड़ताल कराएगा और निधि में ऐसा अतिरिक्त वार्षिक अंशदान करेगा जो इन नियमों के अधीन मामों का संदाय सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित हों :

परन्तु यह कि निगम, जिस वित्तीय वर्ष में निधि का गठन किया गया है, उसके ठीक पश्चात्तवर्ती 31 मार्च को निधि की वित्तीय स्थिति के संबंध में बीमांकित से जांच पड़ताल करवाएगा।

12. निधि का निवेश :—

निधि में अंशदान की गई या प्राप्त हुई अथवा निधि में व्याज या अन्यथा प्रोद्भूत राजका, यथास्थिति, अंशदान, प्राप्ति या प्रोद्भव की तारीख से उचित समय के भीतर आय कर

अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन बनाए गए आय कर नियम, 1962 के नियम 85 और नियम 89 के खंड (ii) के अनुसार निपटारा किया जाएगा और निधि में यथा लागू भारत में पूंजी या व्याज, दोनों के संबंध में संदेय होगा।

13. निधि से संदाय :— न्यास द्वारा लाभों के संदाय का भुगतान निम्नलिखित रूप में किया जाएगा, अर्थात् :—

- (क) न्यास, यथास्थिति, प्रत्येक कर्मचारी या उसके कुटुम्ब के संबंध में तब जब इन नियमों के अधीन कर्मचारी या उसके कुटुम्ब लाभों के लिए पात्र हो जाता है, निगम से तत्काल वार्षिकियां खरीदेगा;
- (ख) न्यास नियम 5 (3) के अधीन यथाधिकतम निगम द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाली निधि में अतिरिक्त धनराशि की उपलब्धता के अधीन रहते हुए, इन नियमों के अनुसार संदेय लाभों का जब कभी उध्वंगामी पुनरीक्षण (बढ़ाया जाना) आवश्यक हो जाए, अतिरिक्त वार्षिकियां खरीदेगा;
- (ग) न्यास, इन नियमों के अधीन संदेय लाभों को किसी भी कारण से और नीचे की ओर पुनरीक्षण किए जाने की स्थिति में, खराँदी गई वार्षिकियों के अधीन निगम से प्राप्त उतने लाभों को जो इन नियमों के अधीन संदेय लाभों से अधिक हो निधि में जमा करेगा।

अध्याय 4

अर्हक सेवा

14. अर्हक सेवा :—

इन नियमों में अंतर्विष्ट अन्य शर्तों के अधीन रहते हुए ऐसा कर्मचारी जिसने अपनी सेवा निवृत्ति की तारीख को निगम में न्यूनतम 10 वर्ष सेवा की हों, पेंशन के लिए अर्हक होगा।

15. अर्हक सेवा का प्रारंभ :—

इन नियमों में अंतर्विष्ट उपबंधों के अधीन रहते हुए किसी कर्मचारी की अर्हक सेवा उस तारीख से प्रारंभ होगी, जिस तारीख को वह उस पद का कार्यभार ग्रहण करता है, जिस पर वह पहली बार नियमित आधार पर नियुक्त हुआ हो।

16. परीक्षा पर की गई सेवा की गणना :—

निगम में किसी पद पर परीक्षा पर की गई सेवा अर्हक होगी, यदि उसके पश्चात् उसी पद या किसी अन्य पद पर उसकी पूर्णता हो जाती है।

17. छुट्टी पर व्यतीत अवधि की गणना :—

निगम में सेवा काल की ऐसी सभी छुट्टी की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी जिसके लिए छुट्टी वेतन संदेय हो।

परन्तु चिकित्सीय प्रमाण पत्र के आधार पर या मितल अर्थात् के कारण कर्मचारी द्वारा कार्यभार ग्रहण न करने या पुनःग्रहण न करने के कारण संजूर की गई बिना वेतन के असाधारण छुट्टी की भी अर्हक सेवा के रूप में गणना की जाएगी यदि वह संजूर सेवाश्रम में 12 मास से अधिक न हो।

18. पुनर्नियुक्ति पर अर्हक सेवा :—

जहां, —

(क) कोई व्यक्ति कर्मचारिवृन्द विनियम के विनियम 12 में अंतर्विष्ट उपबंधों के अनुसार पुनर्नियुक्त किया गया हो; या

(ख) कोई कर्मचारी विकास अधिकारी हो और उसकी सेवाएं निम्नलिखित में अंतर्विष्ट उपबंधों के अनुसार समाप्त की गई थीं, —

- (i) कर्मचारिवृन्द विनियम की अनुसूची 3 से संबंधित निगम की अधिसूचना सं. 65 (24)-बीमा 3/7/74 तारीख 21 अप्रैल, 1976, या
- (ii) अधिनियम की धारा II की उपधारा (2) के अधीन जारी जीवन बीमा निगम विकास अधिकारी (पारिश्रमिक और सेवा के अन्य निबंधनों तथा शर्तों का परिवर्तन) आदेश 1976 से संबंधित भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सा. का. नि. सं. 290(अ) तारीख 8 अप्रैल 1976; या
- (iii) 19 दिसम्बर 1978 को भारत के राजपत्र, असाधारण भाग 3 खंड 4 में प्रकाशित कर्मचारिवृन्द विनियम की अनुसूची iii में संबंधित निगम की अधिसूचना तारीख 1 दिसम्बर, 1978; या
- (iv) अधिनियम की धारा II की उपधारा (2) के अधीन जारी जीवन बीमा निगम विकास अधिकारी (पारिश्रमिक और सेवा के अन्य निबंधनों तथा शर्तों का परिवर्तन) आदेश 1978 से संबंधित भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सा. का. नि. सं. 584 (अ) तारीख 19 दिसम्बर 1978; या
- (v) अधिनियम की धारा 48 की उपधारा (2) के अधीन जारी भारतीय जीवन बीमा निगम विकास अधिकारी (सेवा के कुछ निबंधनों और शर्तों का पुनरीक्षण) नियम 1989 से संबंधित भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सा. का. नि. सं. 643(अ) तारीख 26 जून, 1989;

और जो निगम की सेवा में पुनर्नियुक्त किया गया है ऐसे व्यक्ति या कर्मचारी की यथास्थिति उसक

पुनर्नियोजन या पुनर्नियुक्तन से पहले की सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी यदि उगरे ऐसे पुनर्नियोजन या पुनर्नियुक्ति के समय भविष्य निधि में उसे देय निगम के अंशदान और उस पर संचित ब्याज जिसका कि उगरी पिछली सेवा गणना के समय संदाय किया गया था का निगम को संदाय कर दिया हो;

परंतु यह कि :

- (i) इसमें अन्यथा उपबंधित के सिवाए वेतन की हानि पर अमाधारण छुट्टी की अवधि;
- (ii) इन नियमों के नियम 28 में यथाउपबंधित के सिवाए अप्राधिकृत अनुपस्थिति की अवधि;
- (iii) यदि कोई व्यक्ति निगम की अपनी सेवा में त्यागपत्र देने के बाद पुनर्नियोजित या पुनर्नियुक्त किया जाता है तो उसके मामले में उसके पुनर्नियोजन या पुनर्नियुक्ति से पहले की सेवा; की गणना अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी।

19. एक वर्ष से कम की सेवा का खंडित सेवा काल:—

यदि किसी कर्मचारी की सेवा में एक वर्ष से कम का खंडित सेवा काल सम्मिलित है तो यदि यह व्यवधान छह महीने से अधिक की अवधि का हो तो उसे एक वर्षमाना जाएगा और यदि व्यवधान अवधि छह महीने या कम हो तो इसे छोड़ दिया जाएगा।

20. प्रशिक्षण में व्यतीत अवधि की गणना—किसी कर्मचारी द्वारा उसकी नियुक्ति या पुनर्नियोजन या पुनर्नियुक्ति से ठीक पहले निगम में प्रशिक्षण में व्यतीत अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी।

21. किसी पूर्व बीमाकर्ता के साथ की गई पिछली सेवा की गणना:—स्थानान्तरित कर्मचारी की किसी बीमाकर्ता के साथ निरंतर सेवा की अवधि पेंशन के लिए अर्हक होगी:

परंतु यह तब जबकि ऐसा 'स्थानान्तरित कर्मचारी' उस बीमाकर्ता की अपनी सेवा के संबंध में बीमाकर्ता से किसी पेंशन वार्षिकी पेंशन के बदले में उपदान या पेंशन के बदले में ऐसे अन्य अधिवापिता लाभ का पात्र न हो।

22. निलंबन की अवधि—किसी कर्मचारी की निलंबन की अवधि जिसके संबंध में जांच की जा रही हो की गणना अर्हक सेवा के लिए की जाएगी जहां ऐसी जांच पूरी हो जाने के पश्चात् उसे पूरी तरह विमुक्त कर दिया गया है या निलंबन को पूरी तरह अन्यायपूर्ण ठहराया गया है और अन्य मामलों में निलंबन की अवधि को तब तक अर्हक सेवा नहीं गिना जाएगा जब तक कि ऐसे मामलों को शामिल करने वाले कर्मचारिवृन्द विनियम के विनियम 36 के अधीन आदेश पारित करने वाला सक्षम प्राधिकारी उस समय स्पष्ट रूप से यह घोषित न करे कि उसकी गणना केवल उसी सीमा तक की जाएगी जिसकी घोषणा सक्षम प्राधिकारी करे।

23. सेवाकाल का समग्रहण:—किसी कर्मचारी के निगम की सेवा में त्यागपत्र देने या उसके पदच्युत किए जाने या हटाए जाने या सेवा समाप्ति या अनिवार्य सेवानिवृत्ति पर उसकी संपूर्ण पिछली सेवा समग्रहण हो जाएगी और परिणाम-स्वरूप वह पेंशन संबंधी लाभों के लिए अर्हक नहीं होगी।

24. विदेश सेवा में प्रतिनियुक्ति की अवधि:—संयुक्त राष्ट्र या किसी अन्य विदेशी निकाय या संगठन की विदेश सेवा में प्रतिनियुक्त कर्मचारी अपने विकल्प पर,—

- (क) अपनी विदेश सेवा के संबंध में पेंशन का अंशदान अदा कर सकता है और ऐसी सेवा की गणना इन नियमों के अधीन अर्हक सेवा के रूप में कर सकता है; या
- (ख) विदेशी नियोजक के नियमों के अधीन अनुश्रेय सेवानिवृत्ति फायदों का उपयोग कर सकेगा और ऐसी सेवा की गणना इन नियमों के अधीन अर्हक सेवा के रूप में नहीं करेगा;

परंतु यदि कोई कर्मचारी खंड (ख) के लिए विकल्प देता है तो उसे सेवा निवृत्ति फायदे भारत में भुगतान में ऐसी तारीख में और ऐसी रीति से संदेय की जाएगी जिसे निगम आदेश द्वारा विनिर्दिष्ट करे।

25. सैनिक सेवा:—ऐसा कर्मचारी जिसने निगम में नियुक्ति या पुनर्नियोजन अथवा पुनर्नियुक्ति से पहले सेवा में सेवा की है, सैनिक पेंशन, यदि कोई हो, प्राप्त करना रहेगा और सेना में कर्मचारी द्वारा की गई सेवा की गणना पेंशन के लिए अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी।

26. भारत में किसी संगठन में प्रतिनियुक्ति की अवधि:—भारत में किसी अन्य संगठन में कर्मचारी की प्रतिनियुक्ति की अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी :

परंतु यह तब जबकि ऐसा संगठन जिसमें वह प्रतिनियुक्त है, या कर्मचारी इन नियमों के नियम 7 के उपनियम (क) में विनिर्दिष्ट दरों पर पेंशन संबंधी अंशदान का निगम को संदाय करे।

27. विशेष परिस्थितियों में अर्हक सेवा में परिवर्धन:—कोई भी कर्मचारी अधिवर्षिता पेंशन के लिए (किंतु किसी अन्य वर्ग की पेंशन के लिए नहीं) अर्हक करने वाले अपने सेवाकाल में अपनी सेवा को एक चौथाई से अधिक या उतनी वास्तविक अवधि जितनी भर्ती के समय 28 वर्ष की आयु से अधिक हो या पांच वर्ष की अवधि, इनमें से जो भी कम हो, की वृद्धि करने का पात्र होगा किन्तु यह तब जबकि वह सेवा या पद, जिस पर कर्मचारी को नियुक्त किया गया है, निम्न-लिखित में से एक हो—

- (क) जिसके लिए कि स्नातकोत्तर अनुसंधान या विशेषज्ञ अर्हताएं या वैज्ञानिक प्रौद्योगिक या वृत्तिक क्षेत्रों में अनुभव आवश्यक हो; और

(ख) जिस पर अट्टाईम बर्ष में अधिक आयु के अभ्यर्थी सामान्यतया भर्ती किए जाते हैं; और

अध्याय 5

पेंशन के बर्ग

(ग) जिसके लिए अभ्यर्थी को उसके पाम उच्चतर अर्हनाएं और अनुभव होने के कारण निगम द्वारा निगम अधिकतम आयु सीमा से ऊपर छूट दी गई हो :

परन्तु यह रियायत किसी कर्मचारी को तब तक अनुज्ञेय नहीं होगी जब तक कि निगम की सेवा छोड़ने के समय उसकी वास्तविक अर्हक सेवा कम से कम दस वर्ष न हो :

परन्तु यह भी कि किसी कर्मचारी को यह रियायत तभी अनुज्ञेय होगी जब उक्त सेवा या पद के संबंध में भर्ती नियमों में विशिष्ट रूप से यह उपबंध किया गया हो कि इस सेवा या पद के लिए इस नियम का फायदा उपलब्ध है ।

28. सेवा में व्यवधान का माफ किया जाना:—

- (1) सेवा अभिलेख में किसी प्रतिकूल विशिष्ट अनुदेश के न होने पर इन नियमों में अन्तर्विष्ट विभिन्न उपबंधों के अनुसार गणना की गई सेवा सहित कर्मचारी द्वारा निगम में की गई सेवा की दो अवधियों के बीच के व्यवधान को स्वतः माफ किया गया माना जाएगा और व्यवधान में पहले की सेवा को अर्हक सेवा माना जाएगा ।
- (2) उपनियम (1) की कोई भी बात त्यागपत्र या पदच्युति, या सेवा में हटाए जाने या अनिवार्य सेवानिवृत्ति या सेवा-समाप्ति के कारण आए व्यवधान पर लागू नहीं होगी ।
- (3) उप नियम (2) में उल्लिखित व्यवधान की अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी ।

29. कतिपय मामलों में स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई सेवा की गणना:—

- (1) ऐसे कर्मचारी के मामले में, जो कि अपनी पूर्ण-कालिक नियुक्ति से ठीक पहले, स्थायी अंशकालिक आधार पर निगम की सेवा में नियोजित था और भविष्यनिधि में अंशदान कर रहा था, उसके द्वारा स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई ऐसी सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी ;
- (2) पेंशन की रकम की संगणना के प्रयोजन के लिए उप-नियम (1) में उल्लिखित कर्मचारी की अर्हक सेवा परिशिष्ट-2 के अनुसार अवधारित की जाएगी ।

30. अधिवर्षिता पेंशन :

अधिवर्षिता पेंशन ऐसे कर्मचारी को प्रदान की जाएगी जो कि सेवा नियमों के नियम 14 या कर्मचारीवृन्द विनियम के विनियम 19 के उपविनियम (1) या उपविनियम (2) में विनिर्दिष्ट आयु प्राप्त करने पर सेवानिवृत्त हुआ हो ।

31. स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर पेंशन :

(1) कर्मचारी के बीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर लेने के पश्चात् किसी भी समय वह नियुक्ति प्राधिकारी को कम से कम नब्बे दिन की लिखित देकर सेवानिवृत्त हो सकेगा :

परन्तु यह उपनियम प्रतिनियुक्ति पर कर्मचारी को तब तक लागू नहीं होगा जब तक कि वह स्थानांतरित होने पर या भारत लौटने पर भारत में उस पद का कार्यभार पुनः ग्रहण नहीं कर लेता और कम से कम एक वर्ष की सेवा पूरी नहीं कर लेता है :

परन्तु यह भी कि यह उपनियम ऐसे कर्मचारी को लागू नहीं होगा जो ऐसे किसी स्वशासी निकाय या पब्लिक सेक्टर उपक्रम में स्थायी रूप से आमेलित होने के लिए सेवानिवृत्त होना चाहता है जिसमें कि वह स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति मांगने के समय प्रतिनियुक्ति पर हो ।

(2) उपनियम (1) के अधीन दिए गए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की सूचना के लिए नियुक्ति प्राधिकारी की की स्वीकृति आवश्यक होगी :

परन्तु यदि नियुक्ति प्राधिकारी उक्त सूचना में विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पहले सेवानिवृत्ति के लिए अनुशा देने से इन्कार न करे तो सेवानिवृत्ति उक्त अवधि की समाप्ति की तारीख से प्रभावी हो जाएगी ।

(3)(क) उपनियम (1) में उल्लिखित कर्मचारी नियुक्ति प्राधिकारी यह कारण बताते हुए यह लिखित अनुरोध कर सकेगा कि स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के लिए नब्बे दिन से कम की सूचना स्वीकार कर ली जाए ।

(ख) खंड (क) के अधीन अनुरोध प्राप्त होने पर नियुक्ति प्राधिकारी, उपनियम (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए गुणावगुण के आधार पर सूचना की नब्बे दिन की अवधि में कमी करने के अनुरोध पर विचार कर सकेगा और यदि वह इस बात से संतुष्ट है कि सूचना की अवधि में कमी करने से कोई प्रशासनिक असुविधा पैदा नहीं होगी तो नियुक्ति प्राधिकारी इस शर्त पर नब्बे दिन की सूचना संबंधी अपेक्षा को शिथिल कर सकेगा कि कर्मचारी सूचना के नब्बे दिन समाप्त होने से पहले अपनी पेंशन के किसी भाग के संराशीकरण के लिए आवेदन नहीं करेगा ।

(4) ऐसे कर्मचारी को, जिसने इस नियम के अधीन सेवानिवृत्त होने का चयन किया है और इस संबंध में नियुक्ति प्राधिकारी को आवश्यक सूचना दी है, ऐसे प्राधिकारी के विनिर्दिष्ट अनुमोदन के बिना अपनी सूचना वापस लेने से प्रवर्तित किया जाएगा :

परन्तु यह कि सूचना वापस लेने के लिए अनुरोध सेवानिवृत्ति की आशयित तारीख से पहले किया जाएगा ।

(5) इस नियम के अधीन स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी की अर्हक सेवा इस शर्त के अधीन रहते हुए अधिकतम पांच वर्ष से अनधिक अवधि के लिए बढ़ाई जाएगी कि उस कर्मचारी द्वारा की गई कुल अर्हक सेवा किसी भी स्थिति में तैंतीस वर्षों से अधिक नहीं होगी और इससे यह सेवानिवृत्ति को तारीख से आगे नहीं जाएगी ।

(6) इस नियम के अधीन सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी की पेंशन इन नियमों के नियम 2 के खंड (घ) के अधीन यथापरिभाषित औसत परिलब्धियों पर आधारित होगी और वृद्धि से, जो कि उसकी अर्हक सेवा में पांच वर्ष से अधिक नहीं होगी, वह अपनी पेंशन की संगणना के लिए वेतन के काल्पनिक निर्धारण का हकदार नहीं होगा ।

32. अशक्त पेंशन

(1) ऐसे कर्मचारी को अशक्त पेंशन प्रदान की जा मकेगी,

- (क) जिसने न्यूनतम दस वर्ष सेवा की हो, और
- (ख) जो किसी ऐसे शारीरिक या मानसिक शैथिल्य के कारण सेवानिवृत्त हुआ है जिसने उसे सेवा के लिए स्थायी रूप से असमर्थ बना दिया है ।

(2) अशक्त पेंशन के लिए आवेदन करने वाला कर्मचारी निगम द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी द्वारा दिया गया असमर्थता का चिकित्सा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा ।

33. अनुकंपा भत्ता

(1) ऐसे कर्मचारी की, जिसे सेवा से पदच्युत किया जाता है या हटाया जाता है या अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त किया जाता है या जिसकी सेवा समाप्त की जाती है, पेंशन समपहृत हो जाएगी :

परन्तु पदच्युत करने या सेवा से हटाने या अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त करने या सेवा समाप्त करने के लिए सक्षम प्राधिकारी ऐसी पेंशन का दो तिहाई से अनधिक अनुकंपा भत्ता मंजूर कर सकेगा, जो उसकी पदच्युति, सेवा से हटाए जाने, अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त करने या सेवा समाप्त करने की तारीख तक की गई सेवा के आधार पर उसे अनुज्ञेय होता, यदि—

- (i) ऐसी पदच्युति, सेवा से हटाया जाना, अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त या सेवा समाप्ति 1 नवम्बर, 1993 या उसके पश्चात् की गई हो; और

(ii) सामला विशेष रूप से विचार किए जाने के योग्य हो ।

(2) उपनियम (1) के परन्तुक के अधीन स्वीकृत अनुकंपा भत्ता इन नियमों के नियम 36 के अधीन संवेद्य न्यूनतम पेंशन की रकम से कम नहीं होगा ।

34. 1-1-1986 और 31-10-1993 के बीच सेवानिवृत्त या मृत कर्मचारियों के संबंध में पेंशन या कुटुम्ब पेंशन का संदाय :

(1) 1 जनवरी, 1986 और 31 अक्टूबर, 1993 के बीच निगम की सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी 1 नवम्बर, 1993 से पेंशन के लिए पात्र होंगे ।

(2) नियम 3 के उपानियम (7) में अंतर्विष्ट उपबंधों द्वारा शासित मृत कर्मचारी का कुटुम्ब 1 नवम्बर, 1993 से कुटुम्ब पेंशन का पात्र होगा ।

अध्याय 6

पेंशन की दर

35. पेंशन की रकम :

(1) 1 जनवरी, 1986 और 31 जुलाई, 1987 के बीच सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के संबंध में मूल पेंशन और अतिरिक्त पेंशन को परिशिष्ट 3 में दिए गए सूत्र के अनुसार अद्यतन किया जाएगा ।

(2) तैंतीस वर्ष से अनधिक अर्हक सेवा पूरी करने के पश्चात् सेवा नियमों या कर्मचारिवृत्त विनियमों के उपबंधों के अधीन सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में मूल पेंशन की रकम की संगणना औसत परिलब्धियों के पचास प्रतिशत पर की जाएगी ।

(3) (क) अतिरिक्त पेंशन, कर्मचारी द्वारा अपनी सेवा के अंतिम दस मामलों के दौरान प्राप्त किए गए भत्तों का पचास प्रतिशत होगी ।

(ख) अतिरिक्त पेंशन की रकम पर कोई महंगाई राहत नहीं दी जाएगी ।

स्पष्टीकरण— इस उपनियम के प्रयोजन के लिए “भत्तों” से वे भत्ते अभिप्रेत हैं जो केवल निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए गिनी जाने वाली सीमा तक अनुज्ञेय हैं, अर्थात् :—

- (i) भविष्य निधि में अंशदान करना,
- (ii) मकान किराया भत्ता देना,
- (iii) उपदान का संदाय करना, और
- (iv) प्रोन्नति पर वेतन का पुनः नियतन ।

(4) उपर्युक्त उपनियम (2) और उपनियम (3) के रूप में परिकलित पेंशन इन नियमों में विनिर्दिष्ट न्यूनतम पेंशन के अधीन रहते हुए होगी ।

(5) ऐसे कर्मचारी को जिसने इन नियमों के नियम 41 के उपबंधों के अनुसार अपनी पेंशन के अनुज्ञेय भाग का संराशीकरण करवाया है, प्रत्येक मास पेंशन का केवल अति-शेष ही प्राप्त होगा।

(6) (क) तैंतीस वर्षों की अर्हक सेवा पूरी करने से पहले किन्तु दस वर्षों की अर्हक सेवा पूरी करने के पश्चात् सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में पेंशन की रकम उपनियम (2) और उपनियम (3) के अधीन अनुज्ञेय पेंशन की रकम के अनुपात में होगी और किसी भी स्थिति से पेंशन की रकम इन नियमों में विनिर्दिष्ट न्यूनतम पेंशन की रकम से कम नहीं होगी।

(ख) इन नियमों में किसी बात के होते हुए भी, अशक्त पेंशन की रकम कुटुम्ब पेंशन की उस सामान्य दर से कम नहीं होगी, जो सेवाकाल में मृत्यु होने पर उसके कुटुम्ब को संदेय होती।

(7) इस नियम के अधीन अंतिम रूप से अवधारित पेंशन की रकम पूर्ण रूप में व्यक्त की जाएगी और यदि पेंशन में रूपए का कोई भाग हो तो इसे अगले उच्चतर रूपए में पूर्णकृत किया जाएगा।

36. न्यूनतम पेंशन

न्यूनतम पेंशन की रकम निम्न प्रकार होगी—

(क) 1 नवम्बर, 1993 से पहले सेवानिवृत्त हुए कर्मचारी के मामले में तीन सौ पचहत्तर रूपए (375 रूपए) प्रति मास, और

(ख) 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में सात सौ बीस रूपए (720 रूपए) प्रति मास।

37. महंगाई राहत

(1) मूल पेंशन या कुटुम्ब पेंशन या अशक्त पेंशन या अनुकंपा भत्ते पर महंगाई राहत परिशिष्ट 4 में विनिर्दिष्ट दरों के अनुसार मंजूर की जाएगी।

(2) महंगाई राहत, संराशीकरण के पश्चात् भी, पूर्ण मूल पेंशन पर अनुज्ञात की जाएगी।

39. औसत परिलब्धियों के लिए दस मास की अवधि का अवधारण :

(1) औसत परिलब्धियों के प्रयोजन के लिए पूर्ववर्ती दस मास की अवधि की गणना सेवानिवृत्ति की तारीख से की जाएगी।

(2) स्वीच्छिक सेवानिवृत्ति के मामले में, औसत परिलब्धियों के प्रयोजन के लिए पूर्ववर्ती दस मास की अवधि की गणना उस तारीख से की जाएगी जिसको कर्मचारी स्वीच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुआ है।

(3) पदच्युति या सेवा से हटाए जाने या अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त या सेवा समाप्ति के मामले में औसत

परिलब्धियों के प्रयोजन के लिए पूर्ववर्ती दस मास की अवधि की गणना निगम से उसकी पदच्युति या सेवा से हटाए जाने या अनिवार्य सेवानिवृत्ति या सेवा समाप्ति की तारीख से की जाएगी।

(4) यदि सेवा के अंतिम दस मासों के दौरान कर्मचारी बिना वेतन असाधारण छुट्टी पर इयूटी से अनुपस्थित रहा हो या निलंबित रहा हो और उस अवधि की गणना सेवा के रूप में नहीं की गई हो तो औसत परिलब्धियों की गणना करने समय असाधारण छुट्टी या निलंबन की उक्त अवधि को हिसाब में नहीं लिया जाएगा और दस मास से पहले की उतनी अवधि उसमें सम्मिलित कर दी जाएगी।

अध्याय 7

कुटुम्ब पेंशन

39. कुटुम्ब पेंशन

(1) इन नियमों में अंतर्विष्ट उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यदि कर्मचारी की मृत्यु निम्नलिखित स्थितियों में हुई हो —

(क) एक वर्ष की निरंतर सेवा पूरी होने के पश्चात् ; या

(ख) एक वर्ष की निरंतर सेवा पूरी होने से पहले, परन्तु यह तब जब कि संबंधित मृत कर्मचारी की सेवा में या पद पर नियुक्ति होने से ठीक पहले निगम द्वारा अनुमोदित चिकित्सा आधिकारी द्वारा जांच की गई हो और उसे निगम में नियोजन के लिए उपयुक्त घोषित किया गया हो; या

(ग) सेवानिवृत्ति के पश्चात् और मृत्यु की तारीख को यदि वह पेंशन या अनुकंपा भत्ता पा रहा हो; तो मृत कर्मचारी का कुटुम्ब, कुटुम्ब पेंशन का हकदार होगा, जिसकी रकम का अवधारण परिशिष्ट 5 के अनुसार किया जाएगा।

(2) कुटुम्ब पेंशन की रकम मासिक दरों पर नियत की जाएगी और पूर्ण रूप में व्यक्त की जाएगी और जहां कुटुम्ब पेंशन में रूपए का कोई भाग हो तो इसे अगले उच्चतर रूपए में पूर्णकृत किया जाएगा :

परन्तु किसी भी दशा में कुटुम्ब पेंशन इन नियमों के अधीन विहित अधिकतम पेंशन से अधिक नहीं होगी।

(3) (क) (i) जहां किसी कर्मचारी की जो कि कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, 1923 (1923 का 8) में शासित नहीं होता है, कम से कम सात वर्ष की निरंतर सेवा करने के पश्चात् सेवाकाल में मृत्यु हो जाती है तो कुटुम्ब को संदेय कुटुम्ब पेंशन की दर आहूत अंतिम वेतन के पचास प्रतिशत या उप नियम (1) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब

पेंशन के दुगुने इनमें जो भी कम हो, के बराबर होगी और इस प्रकार अनुज्ञेय रकम कर्मचारी की मृत्यु की तारीख के बाद की तारीख से सात वर्ष की अवधि के लिए या उस तारीख तक की अवधि के लिए जिस तारीख को मृत कर्मचारी यदि वह जीवित रहा होता तो 65 वर्ष की आयु का हो जाता, इनमें जो भी कम हो, संदेय होगी;

(ii) सेवानिवृत्ति के पश्चात् कर्मचारी की मृत्यु की दशा में इस उपनियम के खंड (क) या खंड (ख) के अधीन यथा अवधारित कुटुम्ब पेंशन सात वर्ष की अवधि के लिए या उस तारीख तक की अवधि के लिए जिस तारीख को मृत कर्मचारी यदि वह जीवित रहा होता तो 65 वर्ष की आयु का हो जाता, इनमें जो भी कम हो, संदेय होगी।

(ख) (i) जहां किसी कर्मचारी की जो कि कर्मकार प्रतिकार अधिनियम, 1923 (1923 का 8) से शासित होता हो, सात वर्ष की निरंतर सेवा करने के पश्चात् सेवा-काल में मृत्यु हो जाती है तो कुटुम्ब पेंशन की दर अंतिम आहरित बतन के पचास प्रतिशत या उपनियम (1) के अधीन अनुज्ञात कुटुम्ब पेंशन के डेढ़ गुने, इनमें जो भी कम हो, के बराबर होगी;

(2) उप खंड (1) के अधीन इस प्रकार अवधारित कुटुम्ब पेंशन खंड (क) में उल्लिखित अवधि के लिए संदेय होगी:

(ग) खंड (क) में निविष्ट अवधि समाप्त होने के पश्चात् वह कुटुम्ब, जिसे उस खंड या खंड (ख) के अधीन कुटुम्ब पेंशन मिल रही हो, उप नियम (1) के अधीन अनुज्ञेय दर पर कुटुम्ब पेंशन का हकदार होगा।

(4) इन नियमों में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी मृत कर्मचारी का कुटुम्ब नियम 3 के उपनियम (5) के अनुसार पेंशन का विकल्प करता है या नियम 3 के उपनियम (6) या (7) या (8) में अंतर्विष्ट उपबंधों द्वारा शासित होता है, तो मृत कर्मचारी का ऐसा कुटुम्ब इन नियमों के अधीन कुटुम्ब पेंशन का पात्र होगा।

40. कुटुम्ब पेंशन के संदाय की अवधि :—

(1) जिस अवधि के लिए कुटुम्ब पेंशन संदेय हो, वह अवधि—

(क) विधवा या विधुर की दशा में मृत्यु या पुनर्विवाह की तारीख तक, इनमें जो भी पहले हो;

(ख) पुत्र की दशा में, जब तक कि वह 25 वर्ष की आयु का नहीं हो जाता; और

(ग) अविवाहित पुत्री की दशा में, जब तक कि वह 25 वर्ष की आयु का नहीं हो जाती या जब तक कि उसका विवाह नहीं हो जाता, इनमें जो भी पहले हो, होगी,

परन्तु यदि किसी कर्मचारी का पुत्र या पुत्री किसी मानसिक विकार या निःशक्तता से पीड़ित हो तो शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त हो, जिससे कि वह 25 वर्ष की आयु का होने के बाद भी जीविकोपार्जन में असमर्थ हो तो ऐसे पुत्र या ऐसी पुत्री को आजीवन कुटुम्ब पेंशन निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए दी जाएगी अर्थात् :—

(1) यदि ऐसा पुत्र या पुत्री कर्मचारी के दो या अधिक संतान में से एक हो तो आरंभ में कुटुम्ब पेंशन का संदाय उप नियम (1) के खंड (इ) में निर्धारित क्रम में अवयस्क संतान को किया जाएगा जब तक कि अन्तिम अवयस्क संतान पच्चीस वर्ष की आयु की नहीं हो जाती और तत्पश्चात् कुटुम्ब पेंशन, मानसिक विकार या निःशक्तता से पीड़ित या शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त पुत्र या पुत्री के पक्ष में पुनः प्रारंभ की जाएगी और उसे आजीवन संदेय होगी;

(2) यदि मानसिक विकास या निःशक्तता से पीड़ित एक से अधिक संतान हों या जो शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त हों तो उनकी जन्म की तारीख के क्रम में पेंशन का संदाय किया जाएगा और उनमें से छोटी संतान को कुटुम्ब पेंशन तब मिलेगी जबकि उससे ठीक बड़ी संतान की पात्रता समाप्त हो जाती है:

परन्तु जहां कुटुम्ब पेंशन उक्त जुड़वां संतान को संदेय हो तो इसका संदाय उप नियम (1) के खंड (च) में दी गई रीति से किया जाएगा;

(3) उन मामलों के सिवाय, जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग पुत्र या पुत्री वयस्क हो गया/गई हो, ऐसे पुत्र या पुत्री को संरक्षक के माध्यम से कुटुम्ब पेंशन का संदाय इस प्रकार किया जाएगा मानो वह अवयस्क हो;

(4) उक्त ऐसे किसी पुत्र या ऐसी पुत्री को आजीवन कुटुम्ब पेंशन मंजूर करने से पहले सक्षम प्राधिकारी यह समाधान करेगा कि विकलांगता की प्रकृति ऐसी है कि वह अपनी जीविका उपार्जित करने में असमर्थ है और इसके लिए निगम द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी का प्रमाण पत्र जिसमें यथासंभव संतान की सही शारीरिक या मानसिक स्थिति बताई गई होगी; दिया जाएगा,

(5) ऐसे पुत्र या पुत्री के संरक्षक के रूप में कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने वाला व्यक्ति या संरक्षक के माध्यम से कुटुम्ब पेंशन नहीं लेने वाला पुत्र या पुत्री प्रत्येक तीसरे वर्ष निगम द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी से इस आशय का एक प्रमाण पत्र प्रस्तुत करेगा कि वह अब भी मानसिक विकास का निःशक्तता से पीड़ित है या अब भी शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त है।

स्पष्टीकरण :

इस उपनियम में विनिर्दिष्ट आयु सीमा से अधिक की निःशक्त संतानों को कुटुम्ब पेंशन की मंजूरी निम्नलिखित बातों के अधीन दी जाएगी, अर्थात् :—

(1) इस उप नियम के अधीन पुत्री का विवाह हो जाने पर, विवाह हो जाने की तारीख से कुटुम्ब पेंशन के लिए अपात्र बन जाएगी।

(2) यदि ऐसा पुत्र या ऐसी पुत्री अपनी जीविका उपार्जित करने लग जाता है/जाती है तो उसे संदेय कुटुम्ब पेंशन बन्द कर दी जाएगी। ऐसे मामलों में संरक्षक या पुत्र या पुत्री का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रत्येक मास निगम को यह प्रमाणपत्र दे कि—

(अ) उसके जीविकोपार्जन करना आरंभ नहीं किया है;

(आ) पुत्री की दशा में कि उसका अभी तक विवाह नहीं हुआ है;

(ब) यदि मृत कर्मचारी या पेंशन भोगी का/की विधवा या विधुर हो तो कुटुम्ब पेंशन विधवा या विधुर को संदेय होगी और ऐसा न होने पर पात्र संतान को संदेय होगी;

(क) संतान को कुटुम्ब पेंशन उनकी जन्म की तारीख के क्रम में संदेय होगी और उनमें से छोटी संतान तब तक कुटुम्ब पेंशन के लिये पात्र नहीं होगी जब तक कि उससे पहले वाली बड़ी संतान कुटुम्ब पेंशन पाने के लिए अपात्र नहीं हो जाती:

परन्तु जहां कुटुम्ब पेंशन का संवाय जुड़वा संतान को किया जाता है वहां इसका संदाय उप-नियम (1) के खंड (च) में वर्णित रीति से किया जाएगा;

(च) जहां कुटुम्ब पेंशन का संवाय जुड़वा संतान को किया जाता है वहां ऐसी संतानों को इसका संदाय बराबर-बराबर भाग में किया जाएगा।

परन्तु जहां इस प्रकार किसी एक संतान की पात्रता नहीं रहती है तो उसका भाग दूसरी संतान को दे दिया जाएगा और जहां दोनों संतान की पात्रता नहीं रहती है वहां कुटुम्ब पेंशन यथास्थिति, अगले पात्र संतान या जुड़वा संतान को दी जाएगी।

(2) जब मृत कर्मचारी या पेंशन भोगी एक से अधिक संतान छोड़ जाता है तो ज्येष्ठतम पात्र संतान उपनियम (1) के यथास्थिति खंड (ख) या; खंड (ग) में दी गई अवधि के लिए कुटुम्ब पेंशन का हकदार होगा और उस अवधि की समाप्ति होने पर उससे ठीक छोटी संतान कुटुम्ब पेंशन की मंजूरी के लिए पात्र होगी।

(3) जहां कुटुम्ब पेंशन इस नियम के अधीन किसी अवयस्क को मंजूर की जाती है, वहां वह अवयस्क की ओर से संरक्षक को संदेय होगी।

(4) उस दशा में जब पति और पत्नी दोनों निगम के कर्मचारी हों और इस नियम के उपबंधों द्वारा शासित हों और उनमें एक की मृत्यु सेवा काल में या सेवानिवृत्ति पर हो जाती है तो मृत कर्मचारी की बाबत कुटुम्ब पेंशन यथा-स्थिति उत्तरजीवी पति या पत्नी को संदेय होगी और पति या पत्नी की मृत्यु होने पर मृत माता पिता के संबंध में उत्तरजीवी संतान को दो कुटुम्ब पेंशनों की मंजूरी नीचे विनिर्दिष्ट सीमाओं के अधीन रहते हुए दी जाएगी, अर्थात्:—

(क) यदि उत्तरजीवी बालक नियम 39 के उपनियम (3) के खंड (क) के उपखंड (i) और खंड (ख) के उपखंड (i) में उल्लिखित दरों पर दो कुटुम्ब पेंशनों को पाने के पात्र हैं तो कर्मचारी के 1 नवम्बर, 1993 के पहले सेवानिवृत्त होने या सेवा काल में उसकी मृत्यु हो जाने की स्थिति में दोनों पेंशनों की रकम केवल दो हजार पांच सौ रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी और ऐसे कर्मचारियों के मामले में जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त हो गए थे या उनकी मृत्यु हो गई थी, पेंशनों को रकम केवल चार हजार आठ सौ रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी।

(ख) यदि नियम 39 के खंड (क) के उपखंड (i) में या उपनियम (3) के खंड (ख) के उपखंड (i) में उल्लिखित दरों पर एक कुटुम्ब पेंशन किसी को संदेय नहीं रहती है और उसके बदले में नियम 39 के उपनियम (i) में उल्लिखित दरों पर कुटुम्ब पेंशन संदेय हो जाती है तो उस कर्मचारी की बाबत जो 1 नवम्बर, 1993 के पूर्व सेवानिवृत्त हो गया था या सेवाकाल में उसकी मृत्यु हो गई थी, दोनों पेंशनों की अधिकतम रकम जो केवल दो हजार पांच सौ रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी और ऐसे कर्मचारी की बाबत जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त हो गया था या उसकी मृत्यु हो गई थी यह रकम अधिकतम चार हजार आठ सौ रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी।

(ग) यदि नियम 39 के उपनियम (1) में उल्लिखित दर पर दोनों कुटुम्ब पेंशन संदेय रहती है तो कर्मचारी के 1 नवम्बर, 1993 के पूर्व सेवानिवृत्त होने या सेवाकाल में उसकी मृत्यु होने की दशा में पेंशन की अधिकतम रकम एक हजार दो सौ पचास रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी और उस कर्मचारी की बाबत जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त या मृत्यु होती है तो कुटुम्ब पेंशन की रकम दो हजार चार सौ रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी।

(5) (क) जहां कुटुम्ब पेंशन एक से अधिक विधवाओं को संदेय होती है तो कुटुम्ब पेंशन का सभी विधवाओं को बराबर-बराबर भाग संदाय किया जाएगा।

(ख) किसी विधवा की मृत्यु होने पर उसके हिस्से की कुटुम्ब पेंशन उसकी पात्र संतान को संदेय होगी :

परन्तु यदि विधवा के कोई उत्तरजीवी संतान नहीं हो तो उसके हिस्से की कुटुम्ब पेंशन व्यपगत नहीं होगी अपितु वह अन्य विधवाओं को बराबर-बराबर भागों में संदेय होगी और यदि इस प्रकार की केवल एक ही विधवा जीवित रहती है तो पेंशन की सम्पूर्ण रकम उसे संदेय होगी :

(ग) यदि मृत कर्मचारी या पेंशनभोगी की एक ही विधवा हो किन्तु उसकी दूसरी पत्नी से जो जीवित नहीं है उसके पात्र संतान जीवित हो, तो पात्र संतान कुटुम्ब पेंशन के उस भाग के लिए पात्र होंगे जो कर्मचारी या पेंशनभोगी की मृत्यु के समय उसकी या उनकी माता की यदि वह जीवित होती तो मिलता :

परन्तु यह कि इस प्रकार की संतान या विधवा या विधवाओं को कुटुम्ब पेंशन के अंश या अंशों का संदाय नहीं रहता है तो वह रकम व्यपगत नहीं होगी बल्कि वह दूसरी विधवा/विधवाओं पर दूसरे संतान को जो इसके लिए अन्यथा पात्र होंगे, बराबर हिस्सों में संदेय होगी या यदि केवल एक ही विधवा या संतान हो तो उसे पूरी रकम संदेय होगी :

(घ) जहां कुटुम्ब पेंशन जुड़वां संतानों को संदेय हो तो इसका संदाय उपर्युक्त नियम (1) के खण्ड (ब) में विनिर्दिष्ट रीति से किया जाएगा :

(ङ) इस उपनियम में यथाउपबधित के सिवाय कुटुम्ब पेंशन एक समय में कुटुम्ब के एक से अधिक सदस्यों को संदेय नहीं होगी ।

(6) जहां कोई महिला कर्मचारी या पुरुष कर्मचारी न्यायिक रूप से अलग किया गया जीवित पति या पत्नी पीछे छोड़ जाता हो और कोई संतान न हो वहां मृतक की बाबत कुटुम्ब पेंशन जीवित व्यक्ति को संदेय होगी :

परन्तु जहां, न्यायिक रूप से अलगाव जारकर्म के आधार पर मंजूर किया जाता है और कर्मचारी की मृत्यु इस प्रकार के न्यायिक अलगाव के दौरान होती है, तो जारकर्म के लिए सिद्धदोष पाए गए जीवित व्यक्ति को कुटुम्ब पेंशन संदेय नहीं होगी ।

(7) (क) जहां किसी महिला या पुरुष कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है और वह अपने पीछे न्यायिक रूप से अलग हुआ पति या विधवा छोड़ जाती है/छोड़ जाता है जिसकी कोई संतान हो वहां मृत कर्मचारी की बाबत संदेय कुटुम्ब पेंशन उत्तरजीवी व्यक्ति को संदेय होगी परन्तु यह जब कि वह ऐसी संतान का संरक्षक हो :

(ख) जहां उत्तरजीवी व्यक्ति ऐसी संतान का संरक्षक नहीं रह गया हो वहां कुटुम्ब पेंशन इस प्रकार की संतान के नास्तबिक संरक्षक को संदेय होगी ।

(8) यदि कुटुम्ब पेंशन के लिए पात्र पुत्र या अविवाहित पुत्री अठारह वर्ष की हो जाती है तो कुटुम्ब पेंशन का संदाय सीधे ऐसे पुत्र या अविवाहित पुत्री को किया जाएगा ।

(9) (क) यदि कर्मचारी की सेवाकाल में मृत्यु की स्थिति में इन नियमों के अधीन कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के लिए पात्र किसी व्यक्ति पर कर्मचारी की हत्या करने का या इन प्रकार के अपराध के लिए दुर्रिक्तरित करने का आरोप लगाया जाता है, तो कुटुम्ब के अन्य पात्र सदस्य या सदस्यों सहित ऐसे व्यक्ति के कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के दावे को उसके विरुद्ध संस्थित दांडिक कार्यवाहियां समाप्त होने तक निलंबित रखा जाएगा ;

(ख) यदि खण्ड (क) में निर्दिष्ट दांडिक कार्यवाहियों के समाप्त होने पर, संबद्ध व्यक्ति —

(i) कर्मचारी की हत्या करने या हत्या करने के लिए दुर्रिक्तरित करने के लिए सिद्धदोष ठहराया जाता है तो उसे कुटुम्ब पेंशन से विवर्जित कर दिया जाएगा और कर्मचारी की मृत्यु की तारीख से कुटुम्ब पेंशन कुटुम्ब के अन्य पात्र सदस्य को संदेय होगी ;

(ii) कर्मचारी की हत्या या हत्या करने के लिए दुर्रिक्तरित करने के अपराध से दोषमुक्त किया जाता है तो ऐसे व्यक्ति को कर्मचारी की मृत्यु की तारीख से, कुटुम्ब पेंशन संदेय होगी ;

(ग) उपखण्ड (क) और उपखण्ड (ख) के उपबंध किसी कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के पश्चात् उसकी मृत्यु पर संदेय होने वाली कुटुम्ब पेंशन पर भी लागू होंगे ।

अध्याय—8

संराशीकरण

41. संराशीकरण :—(1) कोई कर्मचारी एक मुश्त संदाय के लिए अपनी पेंशन के एक तिहाई भाग से अनधिक भाग के संराशीकरण के लिए हकदार होगा ।

परन्तु इन नियमों के नियम 3 के उपनियम (5) द्वारा शासित किसी कर्मचारी की बाबत, ऐसे कर्मचारी का कुटुम्ब भी कर्मचारी को अनुज्ञात पेंशन के एक मुश्त संदाय के लिए एक तिहाई भाग से अनधिक भाग के संराशीकरण के लिए हकदार होगा ।

(2) कर्मचारी अपनी इच्छानुसार पेंशन के भाग के संराशीकरण के लिए संकेत करेगा, संराशीकरण के लिए या तो वह अधिकतम सीमा एक तिहाई भाग का उल्लेख कर सकता है अथवा जितना वह इच्छुक हो इससे कम सीमा तक संराशीकरण करा सकता है ।

(3) यदि संराशीकरण के लिए निकाला गया कोई भाग एक रुपए का अंश हो तो संराशीकरण के प्रयोजन के लिए इसे छोड़ दिया जाएगा ।

(4) किसी आवेदक को देय एक मुश्त रकम की संगणना नीचे दी गई सारणी के अनुसार की जाएगी :—

सारणी

एक रुपया प्रतिवर्ष की पेंशन के लिए संराशीकरण मूल्य

अगली जन्मतिथि पर आयु	वर्ष की क्रय संख्या के रूप में अभिव्यक्त संराशीकरण मूल्य	अगली जन्मतिथि पर आयु	वर्ष की क्रय संख्या के रूप में अभिव्यक्त संराशीकरण मूल्य
17	19.28	51	12.95
18	19.20	52	12.66
19	19.11	53	12.35
20	19.01	54	12.05
21	18.91	55	11.73
22	18.81	56	11.42
23	18.70	57	11.10
24	18.59	58	10.78
25	18.47	59	10.46
26	18.34	60	10.13
27	18.21	61	09.81
28	18.07	62	09.48
29	17.93	63	09.15
30	17.78	64	08.82
31	17.62	65	08.50
32	17.46	66	08.17
33	17.29	67	07.85
34	17.11	68	07.53
35	16.92	69	07.22
36	16.72	70	06.91
37	16.52	71	06.60
38	16.31	72	06.30
39	16.09	73	06.01
40	15.87	74	05.72
41	15.64	75	05.44
42	15.40	76	05.17
43	15.15	77	04.90
44	14.90	78	04.65
45	14.64	79	04.40
46	14.37	80	04.17
47	14.10	81	03.94
48	13.82	82	03.72
49	13.54	83	03.52
50	13.25	84	03.32
		85	03.13

टिप्पणी :—(1) उपर्युक्त सारणी पेंशन भोगी की अगली जन्मतिथि पर उसकी आयु के संदर्भ में वर्ष की क्रय संख्या के रूप में अभिव्यक्त पेंशन संराशीकरण मूल्य दर्शाती है। अष्टठावन वर्ष की आयु पर सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में संराशीकृत मूल्य 10.46 वर्ष का क्रय है, और यदि वह अपनी सेवा निवृत्ति से एक वर्ष के भीतर अपनी मासिक पेंशन से 100/— रुपए संराशीकृत करवाता है तो उसे देय एक मुश्त राशि $100 \text{ रु.} \times 21 \times 10.46 = 12,552$ रुपए होती है।

(2) कोई कर्मचारी जिसने अपनी पेंशन के अनुज्ञात भाग का संराशीकरण करवाया हो, वह संराशीकरण की तारीख से पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात् संराशीकृत भाग की पेंशन को पुनः प्राप्त करने का हकदार हो जाएगा।

(3) कोई आवेदक जो अधिवर्षिता पेंशन, स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पेंशन, अशक्त पेंशन या अनुकंपा भत्ता के लिए प्राधिकृत है वह इन नियमों के अधीन अपनी पेंशन के भाग का संराशीकरण कराने का हकदार होगा।

(4) पेंशनभोगी के अधिवर्षिता के समय पर सेवानिवृत्त होने या स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त होने के मामले में, यदि आवेदक संराशीकरण के लिए सेवानिवृत्ति से एक वर्ष के भीतर आवेदन देता है तो उसके लिए चिकित्सीय जांच आवश्यक नहीं होगी। तथापि, यदि ऐसा पेंशन भोगी सेवा निवृत्ति के एक वर्ष के पश्चात् पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन करता है तो उसकी अनुमत चिकित्सीय परीक्षा के अधीन होगी।

स्पष्टीकरण :—कोई आवेदक जो :—

(i) इन नियमों के नियम 32 के अधीन ग्रहात पेंशन पर सेवा निवृत्त होता है, या

(ii) इन नियमों के नियम 33 के अधीन अनुकंपा भत्ता प्राप्त करता है।

वह उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट सीमा के अधीन रहते हुए पेंशन के किसी भाग का संराशीकरण करने के लिए तभी पात्र होगा जब निगम द्वारा अनुमोदित किसी चिकित्सा अधिकारी द्वारा उसे ठीक स्वास्थ्य वाला घोषित कर दिया जाए।

(5) ऐसे किसी कर्मचारी के मामले में पेंशन का संराशीकरण पूर्ण होगा :—

(क) जो अधिवर्षिता या स्वैच्छिक आधार पर सेवानिवृत्ति की तारीख के एक वर्ष के पूर्व पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन दे देता है;

परन्तु वह कि नियम 31 के उपनियम (3) द्वारा शामिल कर्मचारी अपनी पेंशन के किसी भाग के संराशीकरण के लिए तीन मान की गृहणा की अवधि

समाप्त होने से पूर्व आवेदन नहीं कर सकता और पेंशन का संराशीकरण नियम 31 के उपनियम (1) में दी गई सूचना की अवधि के समाप्त होने के पश्चात् पूर्ण होगा।

(ख) अधिवर्षिता पर या स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति पर सेवा निवृत्ति की तारीख के पश्चात् किन्तु सेवा निवृत्त होने की तारीख से एक वर्ष के भीतर यदि वह पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन करता है तो सक्षम प्राधिकारी द्वारा संराशीकरण के लिए आवेदन प्राप्त किए जाने की तारीख को ;

(ग) अधिवर्षिता या स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति पर यदि वह संराशीकरण के लिए एक वर्ष पश्चात् आवेदन करता है तो निगम द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी द्वारा चिकित्सीय प्रमाण पत्र देने की तारीख को ;

(घ) जो 1 नवम्बर, 1993 के पहले सेवा निवृत्त हो चुका है और जो 1 नवम्बर, 1993 को इन नियमों के अधीन शासित होने का विकल्प करता है है नियम 3 के उपनियम (1) के खंड (ख) द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर जहां संराशीकरण के लिए आवेदन किया गया है ;

(ङ) जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् निगम की सेवा में थे किन्तु जो इन नियमों के प्रकाशन के पूर्व सेवा निवृत्त हो गए हों, वहां उसके सेवा निवृत्त होने की तारीख के तत्काल पश्चात् के दिन को, जहां आवेदन नियम 3 के उपनियम (2) के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर आवेदन दिया गया हो ;

(च) जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त हो गया हो किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व मृत कर्मचारों को उसकी सेवा निवृत्ति की तारीख के ठीक पश्चात् के दिन जहां मृत कर्मचारी के कुटुम्ब द्वारा नियम 3 के उपनियम (5) के खंड (क) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर संराशीकरण के लिए आवेदन किया गया हो।

(छ) जिन मामलों में नियम 32 के अधीन अशक्त पेंशन या नियम 33 के अधीन अनुकंपा भत्ता अनुज्ञेय है उन मामलों में संराशीकरण, निगम द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी द्वारा दिए गए चिकित्सीय प्रमाणपत्र की तारीख को पूर्ण होगा।

अध्याय 9

सामान्य शर्तें

42. पेंशन, भविष्य में आचरण अच्छा बने रहने के अधीन होगी:

इन नियमों के अधीन पेंशन की प्रत्येक मंजूरी और उसे जारी रखने की एक विवक्षित शर्त यह होगी कि भविष्य में अच्छा आचरण बना रहे।

43. पेंशन रोकना या प्रत्याहृत करना :

यदि कोई पेंशनभोगी किसी गंभीर अपराध के लिए सिद्धोप ठहराया गया है या किसी गंभीर अवचार का दोषी पाया गया है तो सक्षम प्राधिकारी पेंशन या उसके किसी भाग को, लिखित आदेश द्वारा, स्थायी रूप से या किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए रोक सकेगा या प्रत्याहृत कर सकेगा :

परन्तु यह कि पेंशन का कोई भाग रोक लिया जाए या प्रत्याहृत किया जाए वहां ऐसी पेंशन की रकम इतनी कम नहीं की जाएगी कि वह इन नियमों के अधीन संदेय न्यूनतम पेंशन की रकम से कम हो।

44. न्यायालय द्वारा दोषसिद्धि :

जहां कोई पेंशन भोगी किसी न्यायालय द्वारा किसी गंभीर अपराध के लिए दोषसिद्ध ठहराया गया हो वहां कार्रवाई न्यायालय के ऐसी दोषसिद्धि से संबंधित निर्णय को ध्यान में रखकर की जाएगी।

45. गंभीर अवचार के लिए दोषी पेंशनभोगी :

किसी ऐसे मामले में जो नियम 44 के अन्तर्गत न आता हो, यदि सक्षम प्राधिकारी यह समझता है कि पेंशन भोगी गंभीर अवचार का प्रथमदृष्टया दोषी है तो कोई आदेश पारित करने से पूर्व वह कर्मचारिवृत्त विनियमों के विनियम 39 में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया का अनुसरण करेगा।

46. अन्तिम पेंशन

(1) कोई ऐसा कर्मचारी जो अधिवर्षिता की आय प्राप्त करने पर या अन्यथा सेवानिवृत्त हुआ हो और जिसके विरुद्ध कोई विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियां संस्थित की गई हों या जहां विभागीय कार्यवाही जारी रखी गई हो वहां ऐसी कार्यवाहियों के समाप्त होने पर उसको अनुज्ञेय अधिकतम पेंशन के बराबर अन्तिम पेंशन की अनुमति उसे अनुज्ञात किए जाने वाले सेवानिवृत्त फायदों के समायोजन के अधीन दी जाएगी किन्तु यदि अन्तिम रूप से निर्धारित पेंशन अन्तिम पेंशन से कम है या पेंशन को स्थायी रूप से या किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए कम कर दिया गया हो या रोक लिया गया हो तो कोई वसूली नहीं की जाएगी।

(2) ऐसे मामलों में उपदान का संदाय तब तक नहीं किया जाएगा जब तक उसके विरुद्ध अथवा रही कार्यवाहियां

समाप्त नहीं हो जाती है। उपदान का संदाय कार्यवाहियों के समाप्त हो जाने पर कार्यवाहियों के निर्णय के अधीन किया जाएगा। किसी भी कर्मचारी के वसूल की जाने वाली धनराशि का समायोजन उसे संदेय उपदान की रकम से किया जाएगा। स्पष्टीकरण—इस अध्याय में,—

(क) “गंभीर अपराध पद” के अन्तर्गत ऐसा अपराध आता है जिसमें शासकीय गुप्त बात अधिनियम, 1923 (1923 का 19) के अधीन कोई अपराध अस्तित्व में हो;

(ख) “गंभीर अवचार” पद के अन्तर्गत कोई गुप्त शासकीय संकेत को या संकेत-गद्द या किसी रेखाचित्र, रेखांक, प्रतिमान चीज, टिप्पण, दस्तावेज या जानकारी को, जैसी कि शासकीय गुप्त बात अधिनियम, 1923 (1923 का 19) की धारा 5 में वर्णित है (जो कि निगम के अधीन किसी पद की धारण करते समय प्राप्त हुई थी), संसूचित या प्रकट करना आता है जिससे कि जनसाधारण के हितों पर या राज्य की सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

47. विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियों के दौरान पेंशन का संराशीकरण :—

कोई कर्मचारी जिसके विरुद्ध विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियाँ उसकी सेवानिवृत्ति के पूर्व संस्थित हो गईं हो या कोई व्यक्ति जिसके विरुद्ध उसकी सेवानिवृत्ति के पश्चात् कार्यवाहियाँ संस्थित हों तो वह ऐसी कार्यवाहियों के विचाराधीन रहने के दौरान इन नियमों के अधीन प्राधिकृत, यथास्थिति, अपनी अनंतिम पेंशन के किसी भाग का संराशीकरण का पात्र नहीं होगा।

48. निगम को पहुंचाई गई धन-संबंधी हानि की वसूली :—

(1) अपनी सेवा की अवधि के दौरान किसी विभागीय या न्यायिक कार्यवाही में गंभीर अवचार या लापरवाही या प्रमाद का दोषी पाये जाने वाले किसी पेंशनभोगी के कारण निगम को हुई धन संबंधी हानि के लिये सक्षम प्राधिकारी स्थायी रूप से या किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिये उसकी पेंशन या उसके किसी भाग को रोक सकता है या प्रत्यातक कर सकता है और पूरी रकम या उसके किसी भाग को पेंशन से वसूल करने का आदेश दे सकता है :

परन्तु यह कि किसी अंतिम आदेश को पारित करने से पूर्व कार्यपालक समिति से परामर्श किया जायेगा :

परन्तु यह और कि विभागीय कार्यवाहियाँ यदि कर्मचारी के सेवाकाल के दौरान से ही संस्थित हैं और कर्मचारी इस दौरान, सेवा निवृत्त हो जाता है तो वे इस नियम के अधीन कार्यवाही समझी जायेंगी और इन कार्यवाहियों को शुरू करने वाले प्राधिकारी द्वारा उन्हें ऐसे जारी रखा जायेगा और पूरा किया जायेगा मानो कर्मचारी सेवा में बना हुआ है :

परन्तु यह और भी कि विभागीय या न्यायिक कार्यवाही यदि कर्मचारी के सेवाकाल में प्रारंभ नहीं की

गई है तो ऐसी कार्यवाही संस्थित होने से चार वर्ष से अधिक से पहले के किसी वाद हेतुक की बाबत में या इस अवधि में हुई किसी घटना की वाबत, कोई विभागीय या न्यायिक कार्यवाही संस्थित नहीं की जायेगी।

(2) जहां सक्षम प्राधिकारी धन संबंधी हानि की वसूली पेंशन में से करने का आदेश दे वहां वह ऐसी वसूली सामान्यतया सेवानिवृत्ति की तारीख को अनुज्ञेय पेंशन के एक तिहाई भाग से अधिक दर पर नहीं की जायेगी :

परन्तु यह कि जहां पेंशन का कोई भाग रोक विज्ञा जाता है या प्रत्याहृत किया जाता है वहां पेंशनभोगी की पेंशन राशि इन नियमों के अधीन संदेय न्यूनतम पेंशन राशि से कम नहीं होगी।

49. निगम को देय (बकायों) की वसूली :—निगम, को पेंशन के संराशीकरण या मासिक पेंशन या परिवार पेंशन से आवास, ऋण, अग्निम, अनुज्ञप्ति शुल्क, अन्य वसूलियों और कर्मचारी को प्रापरेटिव क्रेडिट सोसायटी को देय (बकायों) की वसूली करने का हकदार होगा।

50. सेवानिवृत्ति के पश्चात् वाणिज्यिक नियोजन :

(1) यदि कोई पेंशनभोगी जो, अपनी सेवानिवृत्ति से ठीक पहले भण्डल प्रबंधक या उससे उच्च काडर का अधिकारी था और अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से दो वर्ष की समाप्ति से पूर्व कोई वाणिज्यिक नियोजन स्वीकार करना चाहता है, तो वह ऐसी स्वीकृति के लिये निगम की पूर्व मंजूरी प्राप्त करेगा :

परन्तु यह कि ऐसे कर्मचारी को जिसे उसकी सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी के दौरान या अस्वीकृत छुट्टी के दौरान किसी विशेष प्रकार का वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिये निगम द्वारा अनुज्ञात किया गया था, सेवानिवृत्ति के पश्चात् ऐसे नियोजन में बने रहने के लिये निगम से वाद में अनुज्ञा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होगी।

(2) उपनियम (3) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, निगम लिखित आदेश द्वारा पेंशनभोगी द्वारा किये गये आवेदन पर ऐसे पेंशनभोगी को आवेदन में विनिर्दिष्ट वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिये ऐसी शर्तों के, यदि कोई हो, जिन्हें वह आवश्यक समझे, अधीन रहते हुए आदेश में लेखबद्ध किये जाने वाले कारणों में अनुज्ञा दे सकेगा या अनुज्ञा देने से इन्कार कर सकेगा।

(3) किसी पेंशनभोगी को कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिये उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञा देने या देने से इन्कार करने में, निगम निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखेगा, अर्थात् :—

(क) ग्रहण किये जाने के लिये प्रस्तावित नियोजन की प्रकृति और नियोजन के पूर्ववृत्त;

(ख) क्या उस नियोजन में जो वह ग्रहण करने का प्रस्ताव करना है, उसके कर्तव्य ऐसे हो सकते हैं जिनमें उसका निगम के साथ विरोध हो;

(ग) क्या पेंशनभोगी की उसकी सेवा के दौरान नियोजन के साथ, जिसके अधीन वह नियोजन चाहता है, ऐसा व्यवहार या कि जिसमें वह निवृत्ति के लिये यह व्यक्तिगत आधार बने कि ऐसे पेंशनभोगी ने ऐसे नियोजन के प्रति अनुग्रह दर्शाया किया था;

(घ) क्या प्रस्तावित वाणिज्यिक नियोजन के कर्तव्यों में निगम के साथ सम्पर्क या संबंध अंतर्भावित है;

(ङ) क्या उसके वाणिज्यिक कर्तव्य ऐसे होंगे कि सरकार के अधीन उसकी पूर्व पदीय स्थिति या ज्ञान या अनुभव का प्रस्तावित नियोजन को अक्षुब्ध फायदा देने के लिये उपयोग किया जा सकता है;

(च) प्रस्तावित नियोजक द्वारा प्रस्थापित परि-लब्धियां; और

(छ) कोई अन्य संगत तथ्य।

(4) जहां उपनियम (3) के अधीन किसी आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन की कालावधि के भीतर निगम आवेदित अनुज्ञा देने में इंकार नहीं करना है या आवेदन को इंकार किये जाने की संसूचना नहीं देता है वहां निगम के बारे में यह समझा जायेगा कि उसने आवेदित अनुज्ञा दे दी है:

परन्तु किसी ऐसी दशा में जहां आवेदक द्वारा त्रुटिपूर्ण या अशुद्ध सूचना दी जाती है और निगम के लिये उससे और स्पष्टीकरण या जानकारी मागना आवश्यक हो जाता है वहां साठ दिन की अवधि की गणना उस तारीख से की जायेगी जिसको आवेदक द्वारा त्रुटिपूर्ण की गई है या पूर्ण जानकारी दी गई है।

(5) जहां निगम आवेदित अनुज्ञा किसी शर्तों के अधीन रहते हुए देता है या ऐसी अनुज्ञा देने से इंकार करता है वहां आवेदक उस आदेश के निगम के आदेश की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर किसी ऐसी शर्त या इंकार किये जाने के विरुद्ध अप्रवावेदन कर सकेगा और निगम उस पर ऐसे आदेश कर सकेगा जो वह ठीक समझे;

परन्तु ऐसी शर्त को रद्द करने वाले या बिना किसी शर्त के ऐसी अनुज्ञा देने वाले किसी आदेश में भिन्न कोई आदेश, अप्रवावेदन करने वाले पेंशनभोगी को किये जाने के लिये प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शित करने का अवसर दिये बिना इस उपनियम के अधीन नहीं किया जायेगा।

(6) यदि कोई पेंशनभोगी निगम की पूर्व अनुज्ञा के बिना अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से दो वर्ष की मर्यादा के पूर्व किसी समय कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करता है या बिना ऐसी शर्तों को संभार करता है

जिसके अधीन कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने की अनुज्ञा उस नियम के अधीन दी गई है तो निगम लिखित आदेश द्वारा और उसमें लेखबद्ध किये जाने वाले कारणों से यह घोषणा करने के लिये सक्षम होगा कि वह सम्पूर्ण पेंशन या उसके ऐसे भाग का और ऐसी कालावधियों के लिये जो आदेश में निर्दिष्ट की जाएं, हकदार नहीं होगा:

परन्तु ऐसा कोई आदेश संबंधित पेंशनभोगी को ऐसी घोषणा के विरुद्ध कारण दर्शित करने का अवसर दिये बिना नहीं किया जायेगा:

परन्तु यह और कि इस उपनियम के अधीन कोई आदेश करने में, निगम निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखेगा, अर्थात्:—

(i) संबंधित पेंशनभोगी की वित्तीय परिस्थितियां;

(ii) संबंधित पेंशनभोगी द्वारा ग्रहण किये वाणिज्यिक नियोजन की प्रकृति और उसमें प्राप्त होने वाली परि-लब्धियां; और

(iii) कोई अन्य संगत तथ्य।

(7) इस नियम के अधीन निगम द्वारा पारित किया गया कोई आदेश संबंधित पेंशनभोगी को संसूचित किया जायेगा।

(8) इस नियम में,—

(क) "वाणिज्यिक नियोजन" पद से,—

(1) व्यापारिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक, वित्तीय या वृत्तिक कारबार में लगी हुई किसी कंपनी, महकारी सोसाइटी, फर्म या व्यक्ति के अधीन किसी भी हैमियत में कोई नियोजन अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत ऐसी कंपनी का निदेशकत्व और ऐसी फर्म की भागीदारी भी सम्मिलित है, किन्तु ऐसे निगमित निकाय के अधीन, जिस पर केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार का पूर्णतः या मारतः स्वामित्व या नियंत्रण हो, नियोजन इसके अन्तर्गत नहीं आता है;

(2) स्वतन्त्र रूप से अथवा किसी फर्म के भागीदार के रूप में, ऐसे मामलों में मलाहकार या परामर्शदाता के रूप में प्रैक्टिस स्थापित करना अभिप्रेत है जिनकी आवश्यक पेंशनभोगी—

(क) के पास कोई वृत्तिक अर्हताएं न हों और जिन मामलों की आवश्यक प्रैक्टिस की स्थापना करनी है, या उसे संचालित करना है उनका संबंध उसके पदीय ज्ञान या अनुभव से हो, अथवा

(ख) के पास वृत्तिक अर्हताएं हों किन्तु जिन मामलों की आवश्यक ऐसी प्रैक्टिस स्थापित करना है

वे ऐसे हों कि उसकी पूर्व पदीय स्थिति के कारण उसके ग्राहकों को अशुद्ध फायदा होना संभाव्य हो, शयवा

(ग) को ऐसा काम लेना पड़े जिसमें निगम के कार्यालयों या अधिकारियों के साथ संपर्क या संबंध स्थापित करना पड़ सकता हो;

स्पष्टीकरण :—इस खंड के प्रयोजन के लिये “महकारी सोसाइटी के अधीन नियोजन” पद के अन्तर्गत किसी पद का, चाहे वह निर्वाचन कराके मिलता हो या अन्यथा, धारण करना आता है, भले ही उस सोसाइटी में वह किसी भी नाम से जाना जाता हो, जैसे अध्यक्ष, सभापति, प्रबन्धक, सचिव, कोषापाल, इत्यादि।

51. नामनिर्देशन

(1) न्यास इन नियमों द्वारा शासित प्रत्येक कर्मचारी को ऐसा नामनिर्देशन करने के लिये अनुज्ञान करेगा जिसमें पेंशन संबंधी फायदों की रकम संदेय होने या संदेय हो जाने के पश्चात् संदेय न किये जाने के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाने की दशा में इन नियमों के अधीन पेंशन संबंधी फायदों की रकम प्राप्त करने का अधिकार एक या एक से अधिक व्यक्तियों को प्रदान किया गया हो। ऐसे नामनिर्देशन ऐसे प्रारूप में किये जा सकेंगे जो समय-समय पर निगम द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाये।

(2) यदि कोई कर्मचारी उपनियम (1) के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिर्देशन करता है, तो वह नामनिर्देशन में नामनिर्देशितियों में से प्रत्येक को संदेय अंश की रकम इस रीति से करेगा कि उसके अन्तर्गत उसकी मृत्यु के पश्चात् संपूर्ण पेंशन फायदे की रकम आ जाये।

(3) किसी कर्मचारी द्वारा किसी समय पर किये गये नामनिर्देशन को निगम द्वारा समय-समय पर विनिर्दिष्ट ऐसे प्रारूप में न्यास को लिखित सूचना देकर उसका उपांतरण किया जा सकता है या उसका प्रतिसंहरण किया जा सकता है।

(4) कोई नामनिर्देशन या इसकी प्रतिसंहरण या इसका उपांतरण न्यास को प्राप्त होने की तारीख से उस सीमा तक जिस तक वह विधि-मान्य है, प्रभावी होगा।

52. पेंशन संदेय होने की तारीख—(1) ऐसे कर्मचारी के सिवाय जिसको नियम 43 और नियम 46 के उपबंध लागू होते हैं, कुटुम्ब पेंशन से भिन्न पेंशन उस तारीख से जिसको कर्मचारी सेवानिवृत्त होता है, अगली तारीख से संदेय हो जायेगी।

(2) कुटुम्ब पेंशन कर्मचारी या पेंशनभोगी की मृत्यु की तारीख से अगली तारीख से संदेय होगी।

(3) पेंशन जिसके अन्तर्गत कुटुम्ब पेंशन भी है उस दिन के लिये संदेय होगी जिस दिन उसके प्राप्तकर्ता की मृत्यु हो जाती है।

53. मुद्रा जिसमें पेंशन संदेय होगी—इन नियमों के अधीन अन्त्येय सभी पेंशन केवल भारत में रुपये में संदेय होगी।

54. पेंशन संदाय की रीति—मासिक दर पर नियत की गई पेंशन अगले मास के पहला दिन को या उसके पश्चात् मासिक संदेय होगी।

55. अनुदेश जारी करने की शक्ति—निगम का अध्यक्ष समय-समय पर इन नियमों के कार्यान्वयन के लिये जो वह आवश्यक या मसीचीन समझे, अनुदेश जारी कर सकेगा।

56. अवशिष्ट उपबंध—पेंशन या अन्य फायदों का, जिनके संबंध में इन नियमों में कोई अभिव्यक्त उपाबंध नहीं किया गया है, केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को लागू केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 या केन्द्रीय सिविल सेवा, (पेंशन संशोधन) नियम, 1981 में अन्तर्विष्ट तत्संबंधी उपबंधों द्वारा शासित होंगे।

परिशिष्ट 1

[नियम 2 का खण्ड (ब) देखिए]

कर्मचारियों के श्रेणियाँ	नियुक्ति प्राधिकारी
(1)	(2)
(1) क्षेत्रीय प्रबन्धक और उसके उपर के श्रेणियों तथा उनके समतुल्य श्रेणियों में पद।	निगम
(2) उप क्षेत्रीय प्रबन्धक/वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक के श्रेणियों और उनके समतुल्य श्रेणियों में पद।	कार्यालयिक समिति
(3) सहायक मंडल प्रबन्धक/वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक के श्रेणियों और उनके समतुल्य श्रेणियों में पद।	प्रबन्धक
(4) शाखा प्रबन्धक/प्रशासनिक अधिकारियों के श्रेणियों में पद।	प्रबन्धक निदेशक

परिशिष्ट 2

(नियम 29 देखिए)

स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई वास्तविक सेवा	पेंशन की राशि की संगणना के लिये स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई प्रत्येक वर्ष की सेवा के लिये तत्स्थानी अर्हक सेवा की अवधि
---	--

(1)	(2)
3 घंटे से कम	वर्ष का 1/4
3 घंटे या अधिक किन्तु 4 घंटे से कम	वर्ष का 3/8
4 घंटे या अधिक किन्तु 5 घंटे से कम	वर्ष का 1/2
5 घंटे या अधिक किन्तु 6 घंटे से कम	वर्ष का 5/8
6 घंटे या अधिक किन्तु 7 घंटे से कम	वर्ष का 3/4
7 घंटे या अधिक किन्तु 8 घंटे से कम	वर्ष का 7/8

परिशिष्ट 3

(नियम 35 देखिए)

1 जनवरी, 1986 और 31 अक्टूबर, 1987 के बीच सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों के संबंध में मूल पेंशन और अतिरिक्त पेंशन के अद्यतन करने का मूल निम्नलिखित रूप में होगा :—

अ (1) मूल पेंशन निम्नलिखित राशि तक बढ़ाई जाएगी, —

(क) पेंशन के लिए गणना किए जाने योग्य रु०
औसत उपलब्धियों के प्रथम रु० 1000/-
रुपय का 50 प्रतिशत

(ख) अगले 500 रु. का 45 प्रतिशत रु०

(ग) पेंशन के लिए गणना किए जाने योग्य रु०
1500/- रुपये से अधिक औसत
उपलब्धियों का 40 प्रतिशत
कुल (क+ख+ग) रु० (अ)

आ. सेवा निवृत्ति के पहले सेवा के अंतिम (आ)
10 वर्षों की औसत मासिक उप-
लब्धियों का 50 प्रतिशत

इ. उपर्युक्त (1) पर संगणित मूल पेंशन पर
नौचें दी गई सारणी के अनुसार 1980-
100 श्रेणी में औद्योगिक कर्मचारियों
के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता
मूल्य सूचकांक में 1000 सूचकांक पर
मंहगाई राहत

ई. कुल बढ़ी हुई मूल पेंशन (ई)

= (आ) + (इ) ×

अर्हक सेवा के वर्षों की संख्या (अधिकतम
33 वर्ष)

33

उ. सारणी 1-11-1993 की मूल पेंशन रु० (उ)
(अगले उच्चतर रूप तक पूर्णांकित)

(2) अतिरिक्त पेंशन में वृद्धि के लिए भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए गणना में लिए जाने वाले विशेष भत्तों की रकम कर्मचारियों के विनियम या सेवा नियमों के अनुसार भविष्य निधि की श्रेणी में आने वाले विशेष भत्तों की मात्रा के प्रति निर्देश से बढ़ाई जाएगी।

सारणी

1-1-1986 से 31-7-1987 की अवधि के दौरान सेवा निवृत्त हुए सभी वर्गों के कर्मचारियों के लिए 1980-100 श्रेणी में औद्योगिक कर्मचारियों के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में सूचकांक 600 पर निकाली गई मंहगाई राहत की दर

(क) वर्ग 4 कर्मचारी उपर्युक्त (1) पर संगणित पेंशन का 80, 40 प्रतिशत

(ख) 757 रु. प्रतिमास तक पेंशन उपर्युक्त (1) पर संगणित पेंशन का पाने वाले वर्ग III कर्मचारी 67 प्रतिशत

(ग) 757/- रु. प्रतिमास और उससे अधिक पेंशन पाने वाले वर्ग III के कर्मचारी निम्नलिखित मंहगाई राहत के लिए पात्र होंगे :

प्रतिमास की जाने वाली मूल पेंशन की रकम रु.	अनुश्रेय मंहगाई राहत की रकम रु.
757 से 796	508.00
797 से 804	534.00
805 से 824	540.00
825 से 844	553.00
845 से 864	567.00
865 से 884	580.00
885 से 904	593.00
905 से 924	607.00
925 से 944	620.00
945 से 964	634.00
965 से 984	647.00
985 से 1004	660.00
1025 से 1044	687.00
1045 से 1064	701.00
1065 से 1084	714.00
1085 और उससे ऊपर	727.00

(घ) वर्ग 1 और वर्ग 2 के कर्मचारी निम्नलिखित रूप में मंहगाई राहत के पात्र होंगे :

(1) प्रतिमास 765 रु० तक मूल पेंशन पाने वालों के लिए अधिकतम 500 रु० के अधीन रहते हुए उपर्युक्त (1) के अनुसार संगणित पेंशन की रकम का 66 प्रति-
शत

(ii) प्रतिमास 768 रु० से 1163 रु. तक पेंशन पाने वालों के लिए

500 रु.

प्रतिमास मूल पेंशन का मान

मूल पेंशन के प्रतिशत के रूप में
महंगाई राहत की दर

(1)

(2)

(iii) प्रतिमास 1166 रु. या उससे अधिक मूल पेंशन पाने वालों के लिए

अधिकतम 715 रु. के अधीन रहने हुए उपर्युक्त (1) के अनुसार संगणित पेंशन की रकम का 42.90 प्रतिशत

(i) 2400 रु. तक

0.35 प्रतिशत।

(ii) 2401 रु. से 3850 रु. तक

2400 रु. का 0.35 प्रतिशत जमा (+) 2400 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.29 प्रतिशत

(iii) 3851 रु. से 4100 रु. तक

2400 रु. का 0.35 प्रतिशत जमा (+) 3850 रु. और 2400 रु. के बीच के अन्तर का 0.29 प्रतिशत जमा (+) 3850 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.17 प्रतिशत

(iv) 4105 रु. से ऊपर

2400 रु. का 0.35 प्रतिशत जमा (+) 3855 रु. और 2400 रु. के बीच के अन्तर का 0.29 प्रतिशत जमा (+) 4100 रु. और 3850 के बीच के अन्तर का 0.17 प्रतिशत जमा (+) 4100 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.59 प्रतिशत

परिशिष्ट 1

(नियम 37 देखिए)

मूल पेंशन पर महंगाई राहत निम्नलिखित रूप में होगी :—

ऐसे कर्मचारियों की वषा में जो 1 जनवरी, 1986 को या उसके पश्चात् 1 नवम्बर, 1993 से पहले सेवानिवृत्त हो चुके हैं 1980=100 अक्षरों में औद्योगिक कर्मचारियों के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की तिमाही औसत में 600 प्वाइंट से ऊपर प्रत्येक 4 प्वाइंट के लिए महंगाई राहत, यथास्थिति, प्रत्येक बर्कोस्तर के लिए संदेय या प्रत्येक गिरावट के लिए वसूलनीय होगी। ऐसे प्रत्येक उक्त 4 प्वाइंट के लिए महंगाई राहत में ऐसी वृद्धि या कमी की गणना नीचे दी गई रीति में की जाएगी।

प्रतिमास मूल पेंशन का मान

मूल पेंशन के प्रतिशत के रूप में
महंगाई राहत दर

(1)

(2)

(i) 1250 रु. तक

0.67 प्रतिशत

(ii) 1251 रु. से 2000 रु. तक 1250 रु. का 0.67 प्रतिशत जमा (+) 1250 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.55 प्रतिशत

(iii) 2001 रु. से 2130 रु. तक

1250 रु. का 0.67 प्रतिशत जमा (+) 2000 रु. और 1250 रु. के बीच के अन्तर का 0.55 प्रतिशत जमा (+) 2000 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.33 प्रतिशत

(iv) 2130 रु. से ऊपर

1250 रु. का 0.67 प्रतिशत जमा (+) 2000 रु. और 1250 रु. के बीच के अन्तर का 0.55 प्रतिशत जमा (+) 2130 रु. और 2000 रु. के बीच के अन्तर का 0.33 प्रतिशत जमा (+) 2130 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.17 प्रतिशत

(2) ऐसे कर्मचारियों की वषा में, जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त हो चुके हैं, 1980=100 अक्षरों में औद्योगिक कर्मचारियों के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की तिमाही औसत में 1148 प्वाइंट से ऊपर प्रत्येक 4 प्वाइंट के लिए महंगाई राहत, यथास्थिति प्रत्येक बर्कोस्तर के लिए संदेय या प्रत्येक गिरावट के लिए वसूलनीय होगी। ऐसे प्रत्येक उक्त 4 प्वाइंट के लिए महंगाई राहत में ऐसी वृद्धि या कमी की गणना नीचे दी गई रीति में की जाएगी :—

(3) महंगाई राहत 1 फरवरी से प्रारंभ होने वाली और 31 जून/ई को समाप्त होने वाली छमाही के लिए पूर्ण वर्ष के अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर मास के लिए प्रकाशित सूचकांक की तिमाही औसत के आधार पर तथा 1 अगस्त से प्रारम्भ होने वाली और 31 जनवरी को समाप्त होने वाली छमाही के लिए उसी वर्ष के अप्रैल, मई और जून मास के लिए प्रकाशित सूचकांक की तिमाही औसत के आधार पर संदेय होगी।

(4) कुटुम्ब पेंशन, अक्षत पेंशन और अनुकंपा भत्ते के भुगतान में महंगाई राहत ऊपर उल्लिखित दरों के अनुसार संदेय होगी।

(5) महंगाई राहत संग्रहीकरण के पश्चात् भी पूर्ण मूल पेंशन पर अनुज्ञात होगी।

(6) अतिरिक्त पेंशन पर महंगाई राहत संदेय नहीं है।

परिशिष्ट 5

(नियम 39 देखिए)

कुटुम्ब पेंशन का सामान्य घरे निम्नलिखित होगा—

(क) 1-11-1993 से पूर्व सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों की वास्त

प्रतिमास बेतनमान

मासिक कुटुम्ब पेंशन का रकम

(1)

(2)

1500 रु. तक

बेतन का 30 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन जमा होगी ऐसे अर्थों, जिनकी अवधि निधि में अंतर्धान करने के लिए, किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाएगी है, का 30 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगा। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग 375 रु प्रतिमास से कम नहीं होगा।

टिप्पण :-

1501 रु. से 3000 रु.

वेतन का 20 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाती है, का 20 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगा। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग 450 रु. प्रतिमास में कम नहीं होगा।

3000 रु. से ऊपर

वेतन का 15 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाती है, का 15 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगा। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग 600 रु. प्रतिमास में कम और 1250 रु. प्रतिमास में अधिक नहीं होगा।

(ख) 1-11-1993 को या उसके पश्चात सेवा निवृत्त हो चुके या सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों की व्यवस्था।

वेतनमान (1)	मासिक कुटुम्ब पेंशन की रकम (2)
2870 रु. तक	वेतन का 30 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाती है, का 30 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग न्यूनतम 720 रु. प्रतिमास होगा।
2871 रु. से 5740 रु.	वेतन का 20 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाती है, का 20 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग न्यूनतम 860 रु. प्रतिमास होगा।
5740 रु. से ऊपर	वेतन का 15 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाती है, का 15 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग न्यूनतम 1150 रु. प्रतिमास और अधिकतम 2400 रु. प्रतिमास होगा।

- (1) महंगाई राहत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन पर गंदेय नहीं है।
- (2) उपरोक्तानुसार कुटुम्ब पेंशन की गणना के प्रयोजन के लिए "वेतनमान" नियम 2 के खंड (ण) में व्यापकपरिभाषित "वेतन" और नियम 35 के उपनियम (3) के सप्टीकरण में व्यापकपरिभाषित "भत्तों" का योग होगा।

[फा. सं. 2 (4) - बीमा-111/94 (i)]

सी. एस. राय, संयुक्त सचिव

स्पष्टीकरणक शाखा

भारतीय जीवन बीमा निगम की स्थापना जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 की धारा 3 के अधीन की गई थी निगम के कर्मचारियों की सेवा के निबंधन और शर्तें उक्त अधिनियम की धारा 48 के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाए गए नियमों और धारा 49 के अधीन निगम द्वारा बनाए गए विनियमों द्वारा शासित होते हैं।

अधिनियम की धारा 18 और धारा 49 के अधीन नियमों और विनियमों में आरिण्डन गवर्नेमेंट मिशेयोरिटी लाइफइण्डोरेंस कम्पनी लि. के स्थानांतरित कर्मचारियों को छोड़कर किसी के लिए पेंशन के मंदाय का उपबंध नहीं है।

निगम के कर्मचारियों की ओर से निगम में पेंशन स्कीम शुद्ध करने के लिए निरंतर मांग की जाती रही है। निगम के कर्मचारियों की सुनियतों के साथ परामर्श करके भविष्य निधि में किए जाने वाले निगम के अंशदान के बढ़ते 1 नवम्बर 1993 से सूचकांक पर आधारित पेंशन स्कीम लागू करने की सिफारिश की है।

प्रस्तावित पेंशन स्कीम उन्हें लागू होगी जिन्होंने निगम की सेवा में 1-11-1993 को या उसके पश्चात प्रवेश किया है। तथापि पेंशन स्कीम का फायदा ऐसे कर्मचारियों की भी दिए जाने का प्रस्ताव है जो 1-11-1986 को या उसके पश्चात सेवानिवृत्त हो गई हैं या जिनकी मृत्यु हो गई है। उन कर्मचारियों के संबंध में भी, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, कतिपय शर्तों को पूरा करने के अधीन रहते हुए, कुटुम्ब पेंशन का फायदा दिए जाने का भी प्रस्ताव है।

प्रमाणित किया जाता है कि इस पेंशन स्कीम को भूतलकी प्रभाव से लागू करने से निगम के किसी भी कर्मचारी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है।

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
(INSURANCE DIVISION)

New Delhi, the 28th June, 1995

NOTIFICATION

G.S.R. 525(E).—In exercise of the powers conferred by section 48 of the Life Insurance Corporation Act, 1956 (31 of 1956), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

CHAPTER-I
PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—These rules may be called the Life Insurance Corporation of India (Employees) Pension Rules, 1995.

(2) Save as otherwise expressly provided in these rules, these rules shall be deemed to have come into force on the 1st day of November, 1993.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires:—

- (a) "Act" means the Life Insurance Corporation Act, 1956 (31 of 1956);
- (b) "actuary" shall have the meaning assigned to it in clause (1) of section 2 of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);
- (c) "Appendix" means an Appendix annexed to these rules;
- (d) "average emoluments" means the average of the pay drawn by an employee during the last ten months of his service;
- (e) "child" means a child of the employee, who, if a son, is under twenty-five years of age and if a daughter, is unmarried and is under twenty-five years of age and the expression "children" shall be construed accordingly;
- (f) "Competent Authority" means,—
 - (i) in relation to employees belonging to the cadre of Assistant Administrative Officers and employees belonging to Class II, Class III and Class IV, the Zonal Manager in-charge of the Zone of the Corporation; and
 - (ii) in any other case, the appointing authority specified by Appendix I to these rules;
- (g) "contribution" means any sum credited by the Corporation on behalf of an employee to the Fund, but shall not include any sum credited as interest;
- (h) "Corporation" means the Life Insurance Corporation of India established under section 3 of the Life Insurance Corporation Act, 1956 (31 of 1956);
- (i) "date of retirement" means the last day of the month in which an employee attains the age of superannuation or the date on which he is retired by the Corporation or the date on which the employee voluntarily retires;
- (j) "employee" means any person employed in the service of the Corporation on full-time work on permanent basis and who opts and is governed by these rules but does not include an employee retired before the commencement of these rules and who is drawing pension from the Pension Fund of the Oriental Government Security Life Assurance Company

Limited in accordance with sub-regulation (2) of regulation 76 of the Life Insurance Corporation of India (Staff) Regulations, 1960, made under the Act;

- (k) "family" in relation to an employee means,—
 - (i) wife in the case of a male employee or husband in the case of a female employee;
 - (ii) a judicially separated wife or husband, such separation not being granted on the ground of adultery and the person surviving was not held guilty of committing adultery;
 - (iii) son who has not attained the age of twenty-five years and unmarried daughter who has not attained the age of twenty five years including such son or daughter adopted legally before retirement;
- (l) "financial year" means a year commencing on the first day of April;
- (m) "Fund" means the Life Insurance Corporation of India (Employees) Pension Fund constituted under rule 5;
- (n) "notified date" means the date on which these rules are published in the Official Gazette;
- (o) "pay" includes,—
 - (a) in relation to an employee who has retired or died on or after the 1st day of January, 1986 but before the 1st day of November, 1993,—
 - (i) the basic pay including the stagnation increments if any; and
 - (ii) all allowances counted for the purposes of making contribution to the Provident Fund and for the payment of dearness allowance;
 - (b) in relation to an employee who retires or dies while in service on or after the 1st day of November, 1993,—
 - (i) the basic pay including the stagnation increments if any; and
 - (ii) all allowances counted for the purposes of making contribution to the Provident Fund and for the payment of dearness allowance; and
 - (iii) fixed personal allowance not exceeding the last increment in the scale of pay; and

- (iv) dearness allowance calculated upto Index number 1148 in the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960—100;
- (p) "pension" includes the basic pension and the additional pension referred to in Chapter VI of these rules;
- (q) "pensioner" means an employee eligible for pension under this rules;
- (r) "qualifying service" means the service rendered while on duty or otherwise which shall be taken into account for the purpose of pension under these rules;
- (s) "retirement" means:—
 - (i) retirement in accordance with the provisions contained in sub-regulation (1) or sub-regulation (2) or sub-regulation (3) of regulation 19 of the Life Insurance Corporation of India (Staff) Regulations, 1960 and rule 14 of the Life Insurance Corporation of India Class III and Class IV Employees (Revision of Terms and Conditions of Service) Rules, 1985 made under the Act;
 - (ii) voluntary retirement in accordance with the provisions contained in rule 31 of these rules;
- (t) "Service Rules" includes,—
 - (i) the Life Insurance Corporation of India Class I Officers (Revision of Terms and Conditions of Service) Rules, 1985;
 - (ii) The Life Insurance Corporation of India Class III and Class IV Employees (Revision of Terms and Conditions of Service) Rules, 1985;
 - (iii) The Life Insurance Corporation of India Development Officers (Revision of Terms and Conditions of Service) Rules, 1986; made under section 48 of the Act;
- (u) "Staff Regulations" means the Life Insurance Corporation of India (Staff) Regulations, 1960 made under the Act;
- (v) "trust" means the trust of the Life Insurance Corporation of India (Employees) Pension Fund constituted under sub-rule (1) of rule 5;

- (w) "trustee" means the trustee of the Life Insurance Corporation of India (Employees) Pension Fund constituted under rule 5;
- (x) "trustee of the Provident Fund" means the trustees of the Provident Fund of the Corporation;
- (y) all other words and expressions used in these rules but not defined, and defined in the Act or the Service Rules or the Staff Regulations shall have the same meanings respectively assigned to them in the Act, the Service Rules or the Staff Regulations, as the case may be.

CHAPTER II

APPLICATION AND ELIGIBILITY

3. Application.—These rules shall apply to employees who,—

- (1) (a) were in the service of the Corporation on or after the 1st day of January, 1986 but had retired before the 1st day of November, 1993; and
- (b) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
- (c) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause(b), the entire amount of the Corporation's contribution to the Provident Fund including interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of six per cent. per annum on the said amount from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation; or
- (2) (a) have retired on or after the 1st day of November, 1993 but before the notified date; and
- (b) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
- (c) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (b), the entire amount of the Corporation's contribution to the Provident Fund and interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of twelve per cent. per

annum on the said amount from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation; or

- (3)(a) are in the service of the Corporation before the notified date and continue to be in the service of the Corporation on or after the notified date; and
- (b) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the date to become member of the Fund; and
- (c) authorise the trust of the Provident Fund to transfer the entire contribution of the Corporation to their Provident Fund alongwith the interest accrued thereon to the credit of the Fund constituted for the purpose under rule 5; or
- (4) join the service of the Corporation on or after the notified date; and
- (5) were in the service of the Corporation during any time on or after the 1st day of November, 1993 and had died after retirement but before the notified date, their family shall be entitled for the amount of pension payable to them from the date on which they would have been entitled to pension under these rules had they been alive till the date on which they died, if the family of the deceased—
 - (a) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
 - (b) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above, the entire amount of the Corporation's contribution to the Provident Fund and interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid to the Corporation; or
- (6) joined the service of the Corporation on or after the 1st day of November, 1993 but who have died while in the service of the Corporation before the notified date, their family shall be

entitled to the family pension under these rules :

Provided that the family of such a deceased employee refunds within one hundred and eighty days from the notified date the entire amount of the Corporation's contribution to the Provident Fund, if any, and interest accrued thereon together with further simple interest at the rate of twelve per cent. per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation :

Provided further that the family of such a deceased employee shall apply in writing for grant of family pension; or

- (7) were in the service of the Corporation during any time on or after the 1st day of January, 1986 and had died while in service on or before the 31st day of October, 1993 or had retired on or before the 31st day of October, 1993 but died the notified date in which case their family shall be entitled to the family pension under these rules, if the family of the deceased,—
 - (a) exercises an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
 - (b) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above, the entire amount of the Corporation's contribution to the Provident Fund and interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of six per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation; or
- (8) joined the service of the Corporation on or before the 31st day of October, 1993 and who died while in service on or after the 1st day of November, 1993, but before the notified date in which case their families shall be entitled to family pension under these rules if the family of the deceased employee,—
 - (a) exercises an option in writing within one hundred and twenty days from

the notified date to become a member of the Fund; and

- (b) refund within sixty days from the date of expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above the entire amount of the Corporation's contribution to the Provident Fund, including interest accrued thereon, together with a further simple interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account of the employee till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation.

4. Option to subscribe to the Provident Fund.—(1) Notwithstanding anything contained in sub-rule (4) of rule 3, an employee who joins the service of the Corporation on or after the notified date at the age of thirty-five years of more, may, within a period of ninety days from the date of his appointment, elect to forego his right to pension, whereupon these rules shall not apply to him.

(2) The opinion referred to in sub-rule (1) and in rule 3, once exercised shall be final.

CHAPTER III THE FUND

5. Constitution of the Fund.—(1) The Corporation shall constitute a Fund to be called the Life Insurance Corporation of India (Employees) Pension Fund under an irrevocable trust within a period of one hundred and twenty days from the notified date.

(2) The Fund shall have for its sole purpose the provision of the payment of pension or family pension in accordance with these rules to the employee or his family.

*(3) The Corporation shall be a contributor to the Fund and shall ensure that sufficient sums are placed in it to enable the trustees to make due payments to beneficiaries under these rules

6. Liability of the Provident Fund trust.—The Provident Fund trust shall, immediately after the constitution of the Fund, transfer to the Life Insurance Corporation of India (Employees) Pension Fund the accumulated balance of the contribution of the Corporation to the Provident Fund and interest accrued thereon upto the date of such transfer in respect of every employee.

7. Composition of the Fund.—The Fund shall consist of the following, namely :—

- (a) the contribution by the Corporation at the rate of ten per cent per month of the pay of the employee;

Explanation :

For the purpose of this rule "pay" includes—

- (i) the basic pay;
- (ii) allowances other than dearness allowance which count for the purposes of making contribution to the Provident Fund and payment of dearness allowance;
- (iii) dearness allowance payable on the basic pay and the allowances specified in clause (ii) above, upto Index Number 1148 in the quarterly average of the All India Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100; and
- (iv) allowances to the extent they count for Provident Fund, house rent allowance, gratuity and or refixation of salary on promotion :

Provided that the Corporation shall not make any contribution to the account of the Provident Fund of the employee;

- (b) the accumulated contributions of the Corporation to the Provident Fund and interest accrued thereon upto the date of such transfer in respect of the employees;
- (c) the amount consisting of contributions of the Corporation along with interest refunded by the employees who had retired before the date of publication of these rules but who opt for pension in accordance with the provisions contained in these rules;
- (d) the investment in annuities or securities purchased out of the money of the Fund and interest thereon;
- (e) amount of any capital gains arising from the capital assets of the Fund;
- (f) the additional annual contribution made by the Corporation in accordance with the provisions contained in rule 11 of these rules;
- (g) any income from investments of the amounts credited to the Fund;
- (h) the amount consisting of contribution of the Corporation along with interest refunded by the family of the deceased employee.

8. Board of Trustees.—(1) The Board of trustees shall consist of such number of persons not less than three and not more than nine, as may be determined by the Corporation, to be appointed by the corporation.

(2) The power to appoint the trustees shall be vested with the Corporation and all such appointments shall be made in writing.

(3) The Corporation shall nominate one of the trustees to be the Chairman of the Board of trustees. The Corporation shall also nominate a trustee to be an alternate Chairman who shall act as Chairman in the absence of the Chairman.

9. Trustees to carry out the directions of the Corporation.—The trustees shall comply with all such directions as may be given by the Corporation for the proper functioning of the Fund.

10. Books of accounts of the Fund.—(1) The accounts of the Fund shall contain the particulars of all financial transactions relating to the Fund in such form as may be specified by the Corporation.

(2) Within one hundred and eighty days from the closing of each financial year, the trust shall prepare a financial statement of the trust indicating therein the general account of assets and liabilities of the trust and forward a copy of the same to the Corporation.

(3) The accounts of the Fund shall be audited in accordance with the provisions of section 25 of the Act.

11. Actuarial investigation of the Fund.—The Corporation shall cause an investigation to be made by an Actuary into the financial condition of the Fund every financial year, on the 31st day of March, and make such additional annual contributions to the Fund as may be required to secure payment of the benefits under these rules :

Provided that the Corporation shall cause an investigation to be made by an Actuary into the financial condition of the Fund, as on the 31st day of March immediately following the financial year in which the Fund is constituted.

12. Investment of the Fund.—All moneys contributed to the Fund or received or accruing by way of interest or otherwise to the Fund, shall, within a reasonable time from the date of the contribution, receipt or accrual, as the case may be, be dealt in accordance with rule 85 and clause (ii) of rule 89 of the Income-tax Rules 1962, made under the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) and payable both in respect of capital and interest in India as applicable in the Fund.

13. Payments out of the Fund.—The payment of benefits by the trust shall be administered as follows, namely :—

- (a) the trust shall purchase immediate annuities from the Corporation in respect of each employee or his family, as the

case may be, at the time he or his family becomes eligible for the benefits under these rules;

- (b) the trust shall, subject to the availability of additional sums in the Fund, to be provided by the Corporation as required under rule 5(3) purchase additional annuities as and when it becomes necessary to revise upwards the benefits payable in accordance with these rules;
- (c) the trust shall, in the event of the benefits payable under these rules being revised downwards for any reason whatsoever, credit the benefits received from the Corporation under the annuities purchased as exceed the benefits payable under these rules, to the Fund.

CHAPTER-IV QUALIFYING SERVICE

14. Qualifying Service.—Subject to the other conditions contained in these rules, an employee who has rendered a minimum ten years of service in the Corporation on the date of his retirement shall qualify for pension.

15. Commencement of qualifying service.—Subject to the provisions contained in these rules, qualifying service of an employee shall commence from the date he takes charge of the post to which he is first appointed on a regular basis.

16. Counting of service on probation.—Service on probation against a post in the Corporation if followed by confirmation in the same or another post shall qualify.

17. Counting of period spent on leave.—All leave during service in the Corporation for which leave salary is payable shall count as qualifying service:

Provided that extraordinary leave granted on medical certificate or on account of the employees inability to join or rejoin duty due to civil commotion, not exceeding twelve months during the entire service, shall also count as qualifying service.

18. Qualifying service on re-appointment.—Where,—

- (a) a person is re-employed in accordance with the provisions contained in regulation 12 of the Staff Regulations; or
- (b) an employee being a Development Officer, whose services had been terminated in accordance with the provisions contained in,—
 - (i) the notification of the Corporation No. 65(24)-Ins. III/74 dated the 21st

April, 1976, relating to Schedule III to the Staff Regulations; or

- (ii) the notification of the Government of India, Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) No. G.S.R. 290(E) dated the 8th April, 1976 relating to the Life Insurance Corporation Development Officers (Alteration of Remuneration and other Terms and Conditions of Service) Order, 1976 issued under sub-section (2) of section 11 of the Act ; or
- (iii) the notification of the Corporation dated the 19th December, 1978 relating to the Schedule III to the Staff Regulations published in the Gazette of India Extraordinary Part III-Section 4 on 19th December, 1978 ; or
- (iv) the notification of the Government of India, Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) No. G.S.R. 584(E) dated the 19th December, 1978 relating to the Life Insurance Corporation Development Officers (Alteration of Remuneration and other Terms and Conditions of Service) Order 1978 issued under sub-section (2) of section 11 of the Act; or
- (v) the notification of the Government of India, Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) No. G.S.R. 643(E) dated the 26th June, 1989 relating to the Life Insurance Corporation of India Development Officers (Revision of Certain Terms and Conditions of Service) Rules, 1989 issued under sub-section (2) of section 48 of the Act,

and who is re-appointed in the service of the Corporation, the service of such a person or an employee prior to his re-employment or re-appointment, as the case may be, shall be counted in the qualifying service if he has paid to the Corporation at the time of such re-employment or re-appointment the aggregate of the Corporation's contribution due to him in the Provident Fund and the interest thereon which were paid to him on the determination of his previous service :

Provided that:

- (i) periods of extraordinary leave on loss of pay except as otherwise provided herein;
- (ii) periods of unauthorised absence except as provided in rule 28 of these rules;
- (iii) the service prior to his re-employment or re-appointment in the case of a person

re-employed or re-appointed after he has resigned from the service of the Corporation;

shall not be counted as qualifying service.

19. Broken period of service of less than one year.—If the period of service of an employee includes broken period of service of less than one year, then if such broken period is more than six months it shall be treated as one year and if such broken period is six months or less it shall be ignored.

20. Counting of period spent on training.—Period spent by an employee on training in the Corporation immediately before on appointment or re-employment or re-appointment shall count as qualifying service.

21. Counting of past service with the erstwhile Insurer.—Period of continuous service of a "transferred employee" with an insurer shall qualify for pension:

Provided that such "transferred employee" was not eligible for any pension annuity, gratuity in lieu of pension or such other superannuation benefit in lieu of pension from the insurer in respect of his service with such insurer.

22. Period of suspension.—Period of suspension of an employee pending enquiry shall count for qualifying service whereon conclusion of such enquiry, he has been fully exonerated or the suspension is held to be wholly unjustified and, in other cases, the period of suspension shall not count as qualifying service unless the competent authority passing the order under regulation 38 of the Staff Regulations governing such cases expressly declares at the time that it shall count to such extent as such authority may declare.

23. Forfeiture of service.—Resignation or dismissal or removal or termination or compulsory retirement of an employee from the service of the Corporation shall entail forfeiture of his entire past service and consequently shall not qualify for pensionary benefits.

24. Period of deputation to foreign service.—An employee deputed on foreign service to the United Nations or any other foreign body or organisation may, at his option,—

- (a) pay pension contribution in respect of his foreign service and count such service as qualifying service under these rules; or
- (b) avail of the retirement benefits admissible under the rules of the foreign employer and not count such service as qualifying service under these rules :

Provided that where an employee opts for clause (b), retirement benefits shall be payable to him in India in rupees from such date and in such manner as the Corporation may, by order, specify.

25. Military Service.—An employee who has rendered military service before appointment or re-employment or re-appointment in the Corporation shall continue to draw the military pension, if any, and the military service rendered by the employee shall not count as qualifying service for pension.

26. Period of deputation to an organisation in India.—Period of deputation of an employee to another organisation in India will count as qualifying service :

Provided the organisation to which he is deputed or the employee pays the pensionary contributions at the rates specified in sub-rule (a) of rule 7 of these rules, to the Corporation.

27. Addition to qualifying service in special circumstances.—An employee shall be eligible to add to his service qualifying for superannuation pension (but not for any other class of pension) the actual period not exceeding one-fourth of the length of his service or the actual period by which his age at the time of recruitment exceeded twenty-eight years, or a period of five years, whichever is less, if the service or post to which the employee is appointed is one—

- (a) for which post-graduate research, or specialist qualification or experience in scientific, technological or professional fields is essential; and
- (b) to which candidates of more than twenty-eight years of age are normally recruited; and
- (c) for which the candidate was given age relaxation over and above the maximum age limit fixed by the Corporation on account of his possessing higher qualification or experience:

Provided that this concession shall not be admissible to an employee unless his actual qualifying service at the time he quits the service in the Corporation is not less than ten years:

Provided further that this concession shall be admissible only if the recruitment rules in respect of the said service or post contain a specific provision that the service or post is one which carries the benefit of this rule.

28. Condonation of interruption in service.—(1) In the absence of a specific indication to the contrary in the service records, an interruption between two spells of service in the Corporation rendered by an employee including service counted in terms of the various provisions contained in these rules shall be treated as automatically condoned and the pre-interruption service treated as qualifying service.

(2) Nothing in sub-rule (1) shall apply to an interruption caused by resignation or dismissal or removal or compulsory retirement or termination from service.

(3) The period of interruption referred to in sub-rule (2) shall not count as qualifying service.

29. Counting of service rendered on permanent part-time basis in certain cases.—(1) In the case of an employee who immediately prior to his appointment on a whole-time basis, was employed on a permanent part-time basis in the service of the Corporation and was contributing to the Provident Fund, such service rendered by him on a permanent part-time basis shall be counted as qualifying service:

(2) The length of qualifying service of the employee referred to in sub-rule (1) for the purpose of calculating the amount of pension shall be determined in accordance with Appendix II.

CHAPTER V

CLASSES OF PENSION

30. Superannuation Pension.—Superannuation pension shall be granted to an employee who has retired on his attaining the age specified in rule 14 of the Service Rules or sub-regulation (1) or sub-regulation (2) of regulation 19 of the Staff Regulations.

31. Pension on voluntary retirement.—(1) at any time after an employee has completed twenty years of qualifying service he may, by giving notice of not less than ninety days, in writing, to the appointing authority, retire from service:

Provided that the sub-rule shall not apply to an employee who is on deputation unless after having been transferred or having returned to India he has resumed charge on the post in India and has served for a period of not less than one year :

Provided further that this sub-rule shall not apply to an employee who seeks retirement from service or being absorbed permanently in an autonomous body or a public sector undertaking to which he is on deputation at the time of seeking voluntary retirement.

(2) The notice of voluntary retirement given under sub-rule (1) shall require acceptance by the appointing authority :

Provided that where the appointing authority does not refuse to grant the permission for retirement before the expiry of the period specified in the said notice, the retirement shall become effective from the date or expiry of the said period.

(3) (a) An employee referred to in sub-rule (1) may make a request in writing to the appointing authority to accept notice of voluntary retirement of less than ninety days giving reasons therefor; |

(b) On receipt of a request under clause (a), the appointing authority may, subject to the provisions of sub-rule (2), consider such request for the curtailment of the period of notice of ninety days on merits and if it is satisfied that the curtailment of the period of notice will not cause any administrative inconvenience, the appointing authority may relax the requirement of notice of ninety days on the condition that the employee shall not apply for commutation of a part of his pension before the expiry of the notice of ninety days.

(4) An employee, who has elected to retire under this rule and has given necessary notice to that effect to the appointing authority, shall be precluded from withdrawing his notice except with the specific approval of such authority :

Provided that the request for such withdrawal shall be made before the intended date of his retirement.

(5) The qualifying service of an employee retiring voluntarily under this rule shall be increased by a period not exceeding five years, subject to the condition that the total qualifying service rendered by such employee shall not in any case exceed thirty-three years and it does not take him beyond the date of retirement.

(6) The pension of an employee retiring under this rule shall be based on the average emoluments as defined under clause (d) of rule 2 of these rules and the increase, not exceeding five years in his qualifying service, shall not entitle him to any notional fixation of pay for the purpose of calculating his pension.

32. Invalid Pension.—(1) Invalid pension may be granted to an employee who,—

- (a) has rendered minimum ten years of service; and
- (b) retires from the service on account of any bodily or mental infirmity which permanently incapacitates him for the service.

(2) An employee applying for invalid pension shall submit a medical certificate of incapacity from a medical officer approved by the Corporation.

33. Compassionate Allowance.—(1) An employee, who is dismissed or removed or compulsorily retired or terminated from service, shall forfeit his pension :

Provided that the authority competent to dismiss or remove or compulsorily retire or terminate him from service may, if—

- (i) such dismissal, removal compulsory retirement or termination is on or after the 1st day of November, 1993; and
- (ii) the case is deserving of special consideration.

sanction a compassionate allowance not exceeding two thirds of the pension which would have been admissible to him on the basis of the qualifying service rendered upto the date of his dismissal, removal, compulsory retirement or termination.

(2) The compassionate allowance sanctioned under the proviso to sub-rule (1) shall not be less than the amount of the minimum pension payable under rule 36 of these rules.

34. Payment of pension or family pension in respect of employees who retired or died between 1-1-1986 and 31-10-1993.—(1) Employees who have retired from the service of the Corporation between the 1st day of January, 1986 and the 31st day of October 1993 shall be eligible for pension with effect from the 1st day of November, 1993.

(2) The family of a deceased employee governed by the provisions contained in sub-rule (7) of rule 3 shall be eligible for family pension with effect from the 1st day of November, 1993.

CHAPTER VI RATE OF PENSION

15. Amount of Pension.—(1) In respect of employees who retired between the 1st day of January, 1986 but before the 31st day of July, 1987, basic pension and additional pension will be updated as per the formula given in Appendix-III.

(2) In the case of an employee retiring in accordance with the provisions of the Service Rules or of the Staff Regulations after completing a qualifying service of not less than thirty three years the amount of basic pension shall be calculated at fifty per cent of the average emoluments.

(3) (a) Additional pension shall be fifty per cent of the allowances drawn by an employee during the last ten months of his service;

(b) No dearness relief shall be paid on the amount of additional pension.

Explanation.—For the purpose of this sub-rule “allowances” means allowances which are admissible to the extent counted for the following purposes only, namely :—

- (i) making contributions to the Provident Fund;
- (ii) grant of house rent allowance;
- (iii) payment of gratuity; and
- (iv) re-fixation of salary on promotion.

(4) Pension as computed being the aggregate of sub-rules (2) and (3) above shall be subject to the minimum pension as specified in these rules.

(5) An employee who has commuted the admissible portion of his pension as per the provisions of rule 41 of these rules shall receive only the balance of pension monthly.

(6) (a) In the case of an employee retiring before completing a qualifying service of thirty-three years, but after completing a qualifying service of ten years, the amount of pension shall be proportionate to the amount of pension admissible under sub-rules (2) and (3) and in no case the amount of pension shall be less than the amount of minimum pension specified in these rules.

(b) Notwithstanding anything contained in these rules, the amount of invalid pension shall not be less than the ordinary rate of family pension which would have been payable to his family in the event of his death while in service.

(7) The amount of pension finally determined under this rule shall be expressed in whole rupee and where the pension contains a fraction of a rupee, it shall be rounded off to the next higher rupee.

36. Minimum pension.—The amount of minimum pension shall be,—

- (a) rupees three hundred and seventy five per month in respect of an employee who had retired before the 1st day of November, 1993; and
- (b) rupees seven hundred and twenty per month in respect of an employee who retire on or after the 1st day of November, 1993.

37. Dearness Relief.—(1) Dearness relief shall be granted on basic pension or family pension or invalid pension or on compassionate allowance in accordance with the rates specified in appendix IV.

(2) Dearness relief shall be allowed on full basic pension even after commutation.

38. Determination of the period of ten months for average emoluments.—(1) The period of the preceding ten months or the purpose of average emoluments shall be reckoned from the date of retirement.

(2) In the case of voluntary retirement the period of the preceding ten months for the purpose of average emoluments shall be reckoned from the date on which the employee voluntarily retires.

(3) In the case of dismissal or removal or compulsory retirement or termination of service the period of the preceding ten months for the purpose of average emoluments shall be reckoned from the date on which the employee is dismissed or removed or compulsorily retired or terminated by the Corporation.

(4) If during the last ten months of the service an employee had been absent from duty on extraordinary leave on loss of pay or had been under suspension and the period whereof does not count as service, the aforesaid period of extraordinary leave or suspension shall not be taken into account in the calculation of the average emoluments and an equal period before the ten months shall be included.

CHAPTER VII FAMILY PENSION

39. Family Pension.—(1) Without prejudice to the provisions contained in these rules where an employee dies—

- (a) after completion of one year of continuous service; or
- (b) before completion of one year of continuous service, provided the deceased employee concerned immediately prior to his appointment to the service or post was examined by a medical officer approved by the Corporation and declared fit for employment in the Corporation; or
- (c) after retirement from service and was on the date of death in receipt of a pension, or compassionate allowance; the family of the deceased shall be entitled to family pension, the amount of which shall be determined in accordance with appendix V.

(2) The amount of family pension shall be fixed at monthly rates and be expressed in whole rupees and where the family pension contains a fraction of a rupee, it shall be rounded off the next higher rupee :

Provided that in no case a family pension in excess of the maximum prescribed under these rules be allowed.

(3) (a)(i) Where an employee, who is not governed by the Workmen's Compensation Act, 1923 (8 of 1923), dies while in service after having rendered not less than seven years continuous service, the rate of family pension payable to the family shall be equal to fifty per cent of the pay last drawn or twice the family pension admissible under sub-rule (1), whichever is less and the amount so admissible shall be payable from the date following the date of death of the employee for a period of seven years or for a period upto the date on which the deceased employee would have attained the age of sixty five years had he survived, whichever is less;

(ii) in the event of death of an employee after retirement, the family pension as determined under clause (a) or clause (b) of this sub-rule shall be payable for a period of seven years or for a period up to the date on which the retired deceased employee would have attained the age of sixty five years had he survived, whichever is less;

(b)(i) where an employee, who is governed by the Workmen's Compensation Act, 1923 (8 of 1923), dies while in service after having rendered not less than seven years continuous service, the rate of family pension payable to the family shall be equal to fifty per cent of the pay last drawn or one and half times the family pension admissible under sub-rule (1), whichever is less;

(ii) the family pension so determined under sub-clause (i) shall be payable for the period mentioned in clause (a);

(c) after the expiry of the period referred to in clause (a), the family, in receipt of family pension under that clause or clause (b) shall be entitled to family pension at the rate admissible under sub-rule (1).

(4) Notwithstanding anything contained in these rules where the family of a deceased employee opts for pension in accordance with sub-rule (5) of rule 3 or is governed by the provisions contained in sub-rules (6) or (7) or (8) of rule 3, such family of the deceased shall be eligible for family pension under these rules,

40. period of payment of family pension.—(1) The period for which family pension is payable shall be,—

- (a) in the case of a widow or a widower, upto the date of death or re-marriage, whichever is earlier;
- (b) in the case of a son, until he attains the age of twenty-five years; and
- (c) in the case of an unmarried daughter, until she attains the age of twenty-five years or until she gets married, whichever is earlier :

Provided that if the son or daughter of an employee is suffering from any disorder or disability of mind or is physically crippled or disabled so as to render him or her unable to earn a living even after attaining the age of twenty-five years, the family pension shall be payable to such son or daughter for life subject to the following conditions, namely :—

- (i) if such son or daughter is one among two or more children of the employee, the family pension shall be initially payable to the minor children in the order set out in clause (e) of sub-rule (1) until the last minor child attains the age of twenty-five and thereafter the family pension shall be resumed in favour of the son or daughter suffering from disorder or disability of mind or who is physically crippled or disabled and shall be payable to him or her for life;
- (ii) if there are more than one such children suffering from disorder or disability of mind or who are physically crippled or disabled, the family pension shall be paid in the order of their birth and the younger of them will get the family pension only after the elder next above him or her ceases to be eligible :

Provided that where the family pension is payable to such twin children it shall be paid in the manner set out in clause (f) of sub-rule (1);

- (ii) the family pension shall be paid to such son or daughter through the guardian as if he or she were a minor except in the case of physically crippled son or daughter who has attained the age of majority;
- (iv) before allowing the family pension for life to any such son or daughter, the Competent Authority shall satisfy that the handicap is of such a nature as to prevent him or her from earning his or her livelihood and the same shall be evidenced by a certificate obtained from a medical Officer approved by the Corporation, setting out, as far as possible, the exact mental or physical condition of the child,
- (v) the person receiving the family pension as guardian of such son or daughter or such son or daughter not receiving the family pension through a guardian shall produce every three years a certificate from a medical officer approved by the Corporation to the effect that he or she continues to suffer from disorder or disability of mind or continues to be physically crippled or disabled.

Explanation.—The grant of family pension to disabled children beyond the age limit specified in this sub-rule is subject to the following conditions, namely :—

- (i) a daughter shall become ineligible for family pension under this sub-rule from the date she gets married.
- (ii) the family pension payable to such son or daughter shall be stopped if he or she starts earning his or her livelihood. In such cases it shall be the duty of the guardian or son or daughter to furnish a certificate to the Corporation every month that,—
 - (A) he or she has not started earning his or her livelihood;
 - (B) in case of daughter that she has not yet married;
- (d) if a deceased employee or pensioner leaves behind a widow or widow the family pension shall become payable to the widow or widower, failing which to the eligible child;
- (e) family pension to the children shall be payable in the order of their birth and the younger of them shall not be eligible for family pension unless the elder next above him or her has becomes eligible for the grant of family pension :

Provided that where the family pension is payable to twin children it shall be paid in the manner set out in clause (f) of the sub-rule (1),

- (f) where the family pension is payable to twin children it shall be paid to such children in equal shares :

Provided that where one such child ceases to be eligible, his or her share shall revert to the other child and where both of these cease to be eligible, the family pension shall be payable to the next eligible single child or twin children, as the case may be.

(2) Where a deceased employee or a pensioner leaves behind more children than one, the eldest eligible shall be entitled to the family pension for the period mentioned in clauses (b) or (c) of sub-rule (1), as the case may be, and after the expiry of that period the next child shall become eligible for the grant of family pension.

(3) Where family pension is granted under this rule to a minor, it shall be payable to the guardian on behalf of the minor.

(4) In case both wife and husband are employees of the Corporation and are governed by the provisions of this rule and one of them dies while in service or after retirement, the family pension in

respect of the deceased shall be payable to the surviving husband or wife and in the event of death of the husband or wife, the surviving child or children shall be granted the two family pensions in respect of the deceased parents subject to the limits specified below, namely :—

- (a) if the surviving child or children is or are eligible to draw two family pensions at the rates mentioned in sub-clause (i) of clause (a) and sub-clause (i) of clause (b) of sub-rule (3) of rule 39 the amount of both pensions shall be limited to two thousand five hundred rupees only per mensem in respect of employees who retired or died while in service prior to the 1st day of November, 1993 and four thousand eight hundred rupees per mensem only in respect of employees who retired or died on or after the 1st day of November, 1993;
- (b) if one of the family pension ceases to be payable at the rates mentioned in sub-clause (i) of clause (a) or sub-clause (i) of clause (b) of sub-rule (3) of rule 39 and in lieu thereof the family pension at the rate mentioned in sub-rule (1) of rule 39 becomes payable, the amount of both the pensions shall also be limited to two thousand five hundred rupees per mensem in respect of employees who retired or died while in service prior to the 1st day of November, 1993 and four thousand eight hundred rupees per mensem in respect of employees who retired or died on or after the 1st day of November, 1993;
- (c) if both the family pensions are payable at the rate mentioned in sub-rule (1) of rule 39 the amount of the two pensions shall be limited to one thousand two hundred and fifty rupees per mensem in the case of employees who retired or died while in service prior to the 1st day of November, 1993 and two thousand four hundred rupees per mensem in respect of employees who retired or died on or after the 1st day of November, 1993.

(5) (a) Where family pension is payable to more widows than one, the family pension shall be paid to the widows in equal shares;

(b) on the death of a widow, her share of the family pension shall become payable to her eligible child :

Provided that if the widow is not survived by any child, her share of the family pension shall not lapse but shall be payable to the other widows in equal shares, or if there is only one such other widow, in full, to her;

(c) where the deceased employee or pensioner is survived by a widow but has left behind eligible child or children from another wife who is not alive the eligible child or children shall be entitled to the share of family pension which the mother would have received if she had been alive at the time of the death of the employee or pensioner :

Provided that on the share or shares of family pension payable to such a child or children or to a widow or widow ceasing to be payable, such share or shares shall not lapse, but shall be payable to the other widow or widows or to other child or children otherwise eligible, in equal shares, or if there is only one widow or child, in full, to such widow or child;

(d) where the family pension is payable to twin children it shall be paid to such children in the manner specified in clause (f) of sub-rule (1) above;

(e) except as provided in this sub-rule the family pension shall not be payable to more than one member of the family at the same time.

(6) Where a female employee or male employee dies leaving behind a judicially separated husband or widow and no child or children, the family pension in respect of the deceased shall be payable to the person surviving :

Provided that where in a case of the judicial separation is granted on the ground of adultery and the death of the employee takes place during the period of such judicial separation, the family pension shall not be payable to the person surviving if such person surviving was held guilty of committing adultery.

(7) (a) Where a female employee or male employee dies leaving behind a judicially separated husband or widow with a child or children, the family pension payable in respect of the deceased shall be payable to the surviving person provided he or she is the guardian of such child or children;

(b) where the surviving person has ceased to be the guardian of such child or children, such

family pension shall be payable to the person who is the actual guardian of such child or children.

(8) If the son or unmarried daughter eligible for the grant of family pension has attained the age of eighteen years, the family pension may be paid to such son or unmarried daughter directly.

(9) (a) If a person who, in the event of death of an employee while in service, is eligible to receive family pension under these rules is charged with the offence of murdering the employee or for abetting in the commission of such an offence, the claim of such a person, including other eligible member or members of the family to receive the family pension, shall remain suspended till the conclusion of the criminal proceedings instituted against him:

(b) if on the conclusion of the criminal proceedings referred to in clause (a), the person concerned —

(i) is convicted for the murder or abetting in the murder of the employee, such a person shall be debarred from receiving the family pension which shall be payable to the other eligible member of the family, from the date of death of the employee;

(ii) is acquitted of the charge of murder or abetting in the murder of the employee, the family pension shall be payable to such a person from the date of the employee;

(c) the provisions of sub-clauses (a) and (b) shall also apply for the family pension becoming payable on the death of an employee after his retirement.

CHAPTER VIII COMMUTATION

41. Commutation.—(1) An employee shall be entitled to commute for a lump sum payment of a fraction not exceeding one-third of his pension:

Provided that in respect of an employee who is governed by sub-rule (5) of rule 3 of these rules, the family of such employee shall also be entitled to commute or a lump sum payment a fraction not exceeding one-third of the pension admissible to the employee.

(2) An employee shall indicate the fraction of pension which he desires to commute and may either indicate the maximum limit of one-third pension or such lower limit as he may desire to commute.

(3) If fraction of pension to be commuted results in fraction of rupee, such fraction of a rupee shall be ignored for the purpose of commutation.

(4) The lump sum payable to an applicant shall be calculated in accordance with the Table given below :—

TABLE

Commutation Values for pension of Re. one per annum

Age next birthday	Commutation value expressed as number of year's purchase	Age next birthday	Commutation value expressed as number of year's purchase
17	19.28	51	12.95
18	19.20	52	12.66
19	19.11	53	12.35
20	19.01	54	12.05
21	18.91	55	11.73
22	18.81	56	11.42
23	18.70	57	11.10
24	18.59	58	10.78
25	18.47	59	10.46
26	18.34	60	10.13
27	18.21	61	9.81
28	18.07	62	9.48
29	17.93	63	9.15
30	17.78	64	8.82
31	17.62	65	8.50
32	17.46	66	8.17
33	17.29	67	7.85
34	17.11	68	7.53
35	16.92	69	7.22
36	16.72	70	6.91
37	16.52	71	6.60
38	16.31	72	6.30
39	16.09	73	6.01
40	15.87	74	5.72
41	15.64	75	5.44
42	15.40	76	5.17
43	15.15	77	4.90
44	14.90	78	4.65
45	14.64	79	4.40
46	14.37	80	4.17
47	14.10	81	3.94
48	13.82	82	3.72
49	13.54	83	3.52
50	13.25	84	3.32
		85	3.13

Notes.—(1) The Table above indicates the commuted value of pension expressed as number of years purchase with reference to the age of the pensioner as on his next birthday. The commuted value in the case of an employee retiring at the age of fifty eight years is 10.46 years purchase and, therefore, if he commutes rupees one hundred from his pension within one year of retirement the lump sum amount payable to him works out to Rs. $100 \times 10.46 \times 12$ Rs. 12,552

(2) An employee who had commuted the admissible portion of pension is entitled to have the commuted portion of the pension resorted after the expiry of a period of fifteen years from the date of commutation.

(3) An applicant who is authorised a superannuation pension, voluntary retirement pension, invalid pension or compassionate allowance shall be eligible to commute a fraction of his pension under these rules.

(4) In the case of a pensioner eligible for superannuation pension or pension on voluntary retirement, no medical examination shall be necessary, if the application for commutation is made within one year from the date of retirement. However, if such a pensioner applies for commutation of pension after one year from the date of his retirement, the same will be permitted subject to medical examination.

Explanation.—An applicant who —

- (i) retires on invalid pension under rule 32 of these rules, or
 - (ii) is in receipt of compassionate allowance under rule 33 of these rules,
- shall be eligible to commute a fraction of his pension subject to the limit specified in sub-rule (1) after he has been declared fit by a medical officer approved by the Corporation.

(5) The commutation of pension shall become absolute in the case of an employee —

- (a) retiring on superannuation or voluntary retirement who submits an application for commutation of pension before the date of retirement on the date following the date of retirement :

Provided that the employee governed by sub-rule (3) of rule 31 shall not apply for commutation of a part of his pension before the expiry of the notice of three months and the commutation of pension shall become absolute only on the expiry of the period of notice referred to in sub-rule (1) of rule 31;

- (b) retiring on superannuation or on voluntary retirement if he applies for commutation of pension after the date of retirement but before the completion of one year from the date of retirement, on the date of application for commutation is received by the Competent Authority;
- (c) retiring on superannuation or on voluntary retirement, if he applies for commutation of pension after one year

from the date of retirement on the date of the medical certificate given by a medical officer approved by the Corporation;

- (d) who has retired prior to the 1st day of November, 1993; and who opts to be governed by these rules, on the 1st day of November, 1993, where the application of commutation is made within the period specified by clause (b) of the sub-rule (1) of rule 3;
- (e) who was in the service of the Corporation on or after the 1st day of November, 1993 but who retired prior to the publication of these rules, on the day immediately following the date of his retirement, where the application is made within the period specified by clause (b) of sub-rule (2) of rule 3;
- (f) who retired on or after the 1st day of November, 1993, but died prior to the notified date, on the day immediately following the date of his retirement, where the application for commutation is made by the family of the deceased within the period specified by clause (a) of sub-rule (5) of rule 3;
- (g) in respect of whom invalid pension under rule 32 or compassionate allowance under rule 33 is admissible, commutation shall become absolute on the date of the medical certificate given by a medical officer approved by the Corporation.

CHAPTER-IX

GENERAL CONDITIONS

42. Pension subject to future good conduct.—Future good conduct shall be an implied condition of every grant of pension and its continuance under these rules.

43. Withholding or withdrawal of Pension.—The Competent Authority may, by order in writing, withhold or withdraw a pension or a part thereof, whether permanently or for a specified period, if the pensioner is convicted of a serious crime or is found guilty of grave misconduct :

Provided that where a part of pension is withheld or withdrawn, the amount of such pension shall not be reduced below the minimum pension per mensem payable under these rules.

44. Conviction by Court.—Whereas a pensioner is convicted of a serious crime by a Court of Law, action shall be taken in the light of the judgement of the court relating to such conviction.

45. Pensioner guilty of grave misconduct.—In a case not falling under rule 44 if the Competent Authority considers that the pensioner is prima facie guilty of grave misconduct, it shall, before passing an order, follow the procedure specified in regulation 39 of the Staff Regulations.

46. Provisional pension.—(1) An employee who has retired on attaining the age of superannuation or otherwise and against whom any departmental or judicial proceedings are instituted or where departmental proceedings are continued, a provisional pension, equal to the maximum pension which would have been admissible to him, would be allowed subject to adjustment against final retirement benefits sanctioned to him, upon conclusion of the proceedings but no recovery shall be made where the pension finally sanctioned is less than the provisional pension or the pension is reduced or withheld etc. either permanently or for a specified period.

(2) In such cases the gratuity shall not be paid to such an employee until the conclusion of the proceedings against him. The gratuity shall be paid to him on conclusion of the proceedings subject to the decision of the proceedings. Any recoveries to be made from an employee shall be adjusted against the amount of gratuity payable.

Explanation.—In this chapter,—

- (a) the expression 'serious crime' includes a crime involving an offence under the Official Secrets Act, 1923 (19 of 1923);
- (b) the expression "grave misconduct" includes the communication or disclosure of any secret official code or password or any sketch, plan, model, article, note, document or information, such as is mentioned in section 5 of the Official Secrets Act, 1923 (19 of 1924) (which was obtained while holding an office in the Corporation) so as to prejudicially affect the interests of the general public or the security of the State.

47. Commutation of pension during departmental or judicial proceedings.—An employee against whom departmental or judicial proceedings have been instituted before the date of his retirement, or a person against whom such proceedings are instituted after the date of his retirement, shall not be eligible to commute a fraction of his provisional pension, or pension, as the case may be authorised under these rules, during the pendency of such proceedings.

48. Recovery of Pecuniary loss caused to the Corporation.—(1) The Competent Authority may withhold or withdraw a pension or a part thereof, whether permanently or for a specified period, and order recovery from pension of the whole or part of any pecuniary loss caused to the Corporation if

in any departmental or judicial proceedings the pensioner is found guilty of grave misconduct or negligence during the period of his service.

Provided that the Executive Committee shall be consulted before any final orders are passed:

Provided further that departmental proceedings, if instituted while the employee was in service, shall, after the retirement of the employee, be deemed to be proceedings under this rule and shall be continued and concluded by the authority by which they were commenced in the same manner as if the employee had continued in service :

Provided also that no departmental or judicial proceedings, if not initiated while the employee was in service, shall be instituted in respect of a cause of action which arose or in respect of an event which took place more than four years before such institution.

(2) Where the Competent Authority orders recovery of the pecuniary loss from the pension, the recovery shall not ordinarily be made at a rate exceeding one-third of the pension admissible on the date of retirement of the employee :

Provided that where a part of pension is withheld or withdrawn, the amount of pension drawn by a pensioner shall not be less than the minimum pension payable under these rules.

49. Recovery of Corporation's dues.—The Corporation shall be entitled to recover the dues to the Corporation on account of housing loans, advances, licence fees, other recoveries and recoveries due to staff co-operative credit society from the commutation value of the pension or the pension or the family pension.

50. Commercial employment after retirement.—

(1) If a pensioner who, immediately before his retirement was holding the post of an officer belonging to the cadre of Divisional Manager or above and wishes to accept any commercial employment before the expiry of two years from the date of his retirement, he shall obtain the previous sanction of the Corporation to such acceptance:—

Provided that an employee who was permitted by the Corporation to take up a particular form of commercial employment during his leave preparatory to retirement or during refused leave shall not be required to obtain subsequent permission for his continuance in such employment after retirement.

(2) Subject to the provision of sub-rule (3), the Corporation may, by order in writing, on the application by a pensioner, grant, subject to such conditions, if any, as it may deem necessary, permission, or refuse, for reasons to be recorded in the order, permission to such pensioner to take up

the commercial employment specified in the application.

(3) In granting or refusing permission under sub-rule (2) to a pensioner for taking up any commercial employment, the Corporation shall have regard to the following factors, namely:—

- (a) the nature of the employment proposed to be taken up and the antecedents of the employer;
- (b) whether his duties in the employment which he proposes to take up might be such as to bring him into conflict with the Corporation;
- (c) whether the pensioner while in service had any such dealing with the employer under whom he proposes to seek employment as it might afford a reasonable basis for the suspicion that such pensioner had shown favours to such employer;
- (d) whether the duties of the commercial employment proposed involve liaison or contact work with Corporation;
- (e) whether his commercial duties will be such that his previous official position or knowledge or experience under Corporation could be used to give the proposed employer an unfair advantage;
- (f) the emoluments offered by the proposed employer; and
- (g) any other relevant factor.

(4) Where within a period of sixty days of the date of receipt of an application under sub-rule (3), the Corporation does not refuse to grant the permission applied for or does not communicate the refusal to the applicant, the Corporation shall be deemed to have granted the permission applied for :

Provided that in any case where defective or insufficient information is furnished by the applicant and it becomes necessary for the Corporation to seek further clarifications or information from him, the period of sixty days shall be counted from the date on which the defects have been removed or complete information has been furnished by the applicant.

(5) Where the Corporation grants the permission applied for subject to any conditions or refuses such permission, the applicant may, within thirty days of the receipt of the order of the Corporation of that effect, make a representation against any such condition or refusal and the Corporation may make such orders thereon as it deems fit:

Provided that no order other than an order cancelling such condition or granting such permission without any conditions shall be made under this sub-rule without giving the pensioner making the representation an opportunity to show cause against the order proposed to be made.

(6) If any pensioner takes up any commercial employment at any time before the expiry of two years from the date of his retirement without the prior permission of the Corporation or commits a breach of any condition subject to such permission to take up any commercial employment has been granted to him under this rule, it shall be competent for the Corporation to declare by order in writing and for reasons to be recorded therein that he shall not be entitled to the whole or such part of the pension and for such periods as may be specified in the order :

Provided that no such order shall be made without giving the pensioner concerned an opportunity of show cause against such declaration :

Provided further that in making any order under this sub-rule, the Corporation shall have regard to the following factors, namely :—

- (i) the financial circumstances of the pensioner concerned;
- (ii) the nature of, and the emoluments from, the commercial employment taken up by the pensioner concerned; and
- (iii) any other relevant factor.

(7) Every order passed by the Corporation under this rule shall be communicated to the pensioner concerned.

(8) In this rule,

(a) the expression "commercial employment" means—

(i) an employment in any capacity including that of an agent under a company, co-operative society, firm or individual engaged in trading, commercial, industrial, financial or professional business and includes also a directorship of such company and partnership of such firm, but does not include employment under a body corporate, wholly or substantially owned or controlled by the Central Government or a State Government;

(ii) setting up practice, either independently or as a partner of a firm, as adviser or consultant in matters in respect of which the pensioner—

(A) has no professional qualifications and the matter in respect of which the practice is to be set up or is carried on are relatable to his official knowledge or experience, or

(B) has professional qualifications but the matters in respect of which such practice is to be set up are such as are likely to give his clients an unfair advantage by reason of his previous official position, or

(C) has to undertake work involving liaison or contact with the offices or officers of the Corporation.

Explanation.—For the purpose of clause, the expression "employment under a co-operative society" includes the holding of any office, whether elective or otherwise, such as that of President, Chairman, Manager, Secretary, Treasurer and the like, by whatever name called in such society.

51. Nomination.—(1) The trust shall allow every employee governed by these rules to make a nomination conferring on one or more persons the right to receive the amount of pensionary benefits under these rules in the event of his death before that amount becomes payable or, having become payable, has not been paid. Such nomination shall be made in such form as may be specified by the Corporation from time to time.

(2) If any employee nominates more than one person under sub-rule (1), he shall, in his nomination, specify the amount or share payable to each of the nominees in such a manner as to cover the whole of the amount of the pensionary benefits that may be payable in the event of his death.

(3) A nomination made by an employee may, at any time, be modified or revoked by him after giving a written notice to the trust of his intention of doing so in such form as the Corporation may from time to time specify.

(4) A nomination or its revocation or its modification shall take effect to the extent it is valid on the date on which it is received by the trust.

52. Date from which pension becomes payable.--

(1) Except in the case of an employee to whom the provisions of rule 43 and rule 46 apply a pension other than family pension shall become pay-

able from the date following the date on which an employee retires.

(2) Family pension shall become payable from the date following the date of death of the employee or the pensioner.

(3) Pension including family pension shall be payable for the day or which its recipient dies.

53. Currency in which pension is payable.—All pensions admissible under these rules shall be payable in rupees in India only.

54. Manner of payment of pension.—A pension fixed at a monthly rate shall be payable monthly on or after the first day of the following month.

55. Power to issue instructions.—The Chairman of the Corporation may from time to time issue instructions as may be considered necessary or expedient for the implementation of these rules.

56. Residuary provisions.—Matters relating to pension and other benefits in respect of which no express provision has been made in these rules shall be governed by the corresponding contained in the Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 or the Central Civil Services (Commutation of Pension) Rules, 1981 applicable for central government employees.

APPENDIX I

[See clause (f) of rule 2]

Category of Employees Appointing Authority

(i) Posts in the Cadres of
Zonal Manager and above
and equivalent cadres.

Corporation

(ii) Posts in the Cadres of
Deputy Zonal Manager|
Senior

Divisional Manager and
equivalent cadres.

Executive Committee

(iii) Posts in the Cadre of
Assistant Divisional Manager|
Senior Branch Manager and
equivalent cadres.

Chairman

(iv) Posts in the Cadre of
Branch Manager|Administrative
Officer.

Managing Director

APPENDIX II (Sec rule 29)

—A

Actual service rendered on Permanent Part-time basis	Length of corresponding qualifying service for each year of service rendered on permanent part-time basis for calculating the amount of pension
(1)	(2)
Less than 3 hours;	1/4th of a year
3 hours or more but less than 4 hours;	3/8th of a year
4 hours or more but less than 5 hours;	1/2 of a year
5 hours or more but less than 6 hours;	5/8th of a year
6 hours or more but less than 7 hours;	3/4th of a year
7 hours or more but less than 8 hours;	7/8th of a year

APPENDIX-III

(See rule 35)

The formula of updating basic pension and additional pension in respect of employees who retired between the 1st day of January 1986 and the 31st day of July, 1987 shall be as under:

- A. (1) Basic pension shall be increased by an amount of,—
- | | | |
|---|-----|-----|
| (a) 50 per cent. of first Rs. 1000
of the average emoluments
reckonable for pension. | Rs. | |
| (b) 45 per cent. of next Rs. 500 | Rs. | |
| (c) 40 per cent. of the average
emoluments reckonable for
pension exceeding Rs. 1500. | Rs. | |
| Total of (a + b + c) | Rs. | (A) |
- B. 50 per cent. of the average monthly emoluments for the last 10 months in service prior to retirement. Rs. (B)
- C. Dearness relief at index number 600 in the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100, on basic pension calculated at (1) above, as per Table given below. Rs. (C)
- D. Total increased basic pension
= (B) + (C) × number of
years of
qualifying service
(Max. 33 years)
-
- 33
- E. Basic Pension as on 1.11.1993
(rounded off to the
next higher rupee) Rs. (E)

(2) For increase in the additional pension, amount of special allowances counted for making contributions to Provident Fund will be increased with reference to the quantum of special allowances ranking for Provident Fund as per the Staff Regulations or Service Rules.

TABLE

Rates of dearness relief worked out at index No. 600 in the All India Average Consumer Price index for Industrial Workers in the series 1960=100 for all classes of employees who retired during the period 1-1-1986 to 31-07-1987:

- (a) Class IV employees 80.40 per cent of pension calculated at (1) above
- (b) Class III employees 67 per cent of pension drawing pension upto Rs. 757 per month calculated at (1) above
- (c) Class III employees drawing pension of Rs. 757 per month and above will be eligible for dearness relief as under:

Amount of basic pension drawn per month	The amount of dearness relief admissible
(Rs.)	(Rs.)
757 to 796	508.00
797 to 804	534.00
805 to 824	540.00
825 to 844	553.00
845 to 864	567.00
865 to 884	580.00
885 to 904	593.00
905 to 924	607.00
925 to 944	620.00
945 to 964	634.00
965 to 984	647.00
985 to 1004	660.00
1025 to 1044	687.00
1045 to 1064	701.00
1065 to 1084	714.00
1085 and above	727.00

- (d) Class I and Class II employees shall be eligible for dearness relief as under:

- (i) For those drawing basic pension upto Rs. 765 per month 66 per cent of the amount of pension calculated as at (1) above subject to a maximum of Rs. 500.
- (ii) For those drawing basic pension from Rs. 766 to Rs. 1165 per month Rs. 500
- (iii) For those drawing basic pension of Rs. 1166 per month or above 42.90 per cent of the amount of pension calculated as at (1) above subject to a maximum of Rs. 715.

APPENDIX-IV

(See rule 37)

Dearness relief on basic pension shall be as under:—

(1) In the case of employees who retired on or after the 1st day of January, 1986, but before the 1st day of November, 1993, dearness relief shall be payable for every rise or be recoverable for every fall, as the case may be, of every 4 points over 600 points in the quarterly average of the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100. Such increase or decrease in dearness

relief for every said four points shall be calculated in the manner given below:—

Scale of basic pension per month	The rate of dearness relief as a percentage of basic pension
(1)	(2)
(i) upto Rs. 1250	0.67 per cent.
(ii) Rs. 1251 to Rs. 2,000	0.67 per cent of Rs. 1250 plus 0.55 per cent of basic pension in excess of Rs. 1250.
(iii) Rs. 2001 to Rs. 2130	0.67 per cent of Rs. 1250 plus 0.55 per cent of the difference between Rs. 2000 and Rs. 1250 plus 0.33 per cent of basic pension in excess of Rs. 2000.
(iv) above Rs. 2130	0.67 per cent of Rs. 1250 plus 0.55 per cent of the difference between Rs. 2000 and Rs. 1250 plus 0.33 per cent of the difference between Rs. 2130 and Rs. 2000 plus 0.17 per cent of basic pension in excess of Rs. 2130.

(2) In the case of employees who retire on or after the 1st day of November, 1993, dearness relief shall be payable for every rise or be recoverable for every fall, as the case may be, of every 4 points over 1148 points in the quarterly average of the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100. Such increase or decrease in dearness relief for every said four points shall be calculated in the manner given below:—

Scale of basic pension per month	The rate of dearness relief as a percentage of basic pension
(1)	(2)
(i) upto Rs. 2,400	0.35 per cent.
(ii) Rs. 2,401 to Rs. 3,850	0.35 per cent of Rs. 2,400 plus 0.29 per cent of basic pension in excess of Rs. 2,400.
(iii) Rs. 3,851 to Rs. 4,100	0.35 per cent of Rs. 2,400 plus 0.29 per cent of the difference between Rs. 3,850 and Rs. 2,400 plus 0.17 per cent of basic pension in excess of Rs. 3,850.
(iv) above Rs. 4,100	0.35 per cent of Rs. 2,400 plus 0.29 per cent of the difference between Rs. 3,850 and Rs. 2,400 plus 0.17 per cent of the difference between Rs. 4,100 and Rs. 3,850 plus 0.09 per cent of basic pension in excess of Rs. 4,100

(3) Dearness relief shall be payable for the half year commencing from the 1st day of February and ending with 31st day of July on the quarterly average of the index figures published for the months of October, November and December of the previous year and for the half year commencing from the 1st day of August and ending with the 31st day of January on the quarterly average of the index figures published for the months of April, May and June of the same year.

(4) In the case of family pension, invalid pension and compassionate allowance, dearness relief shall be payable in accordance with the provisions mentioned above.

(5) Dearness relief will be allowed on full basic pension even after commutation.

D Dearness relief is not payable on additional pension.

APPENDIX-V

(See rule 39)

Any rates of family pension shall be as under:
Employees retired before 1-11-1993.

Scale of pay per month	Amount of monthly Family Pension
(1)	(2)
Upto Rs. 1500	30 per cent of the 'Pay' shall be the basic family pension plus 30 per cent of allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall not be less than Rs. 375 per month.
Rs. 1501 to Rs. 3000	20 per cent of the 'Pay' shall be the basic family pension plus 20 per cent of allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall not be less than Rs. 450 per month.
Above Rs. 3000	15 per cent of the 'Pay' shall be the basic family pension plus 15 per cent of allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall not be less than Rs. 600 per month and more than Rs. 1250 per month.

(b) In respect of employees retired or retiring on or after 1-11-1993.

Scale of pay	Amount of monthly Family Pension
(1)	(2)
Upto Rs. 2870	30 per cent of the 'Pay' shall be the basic family pension plus 30 per cent of the allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall be subject to a minimum of Rs. 600 per month.

1	2
Rs. 2871 to Rs. 5740	20 per cent of the 'Pay' shall be the basic family pension plus 20 per cent of the allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall be subject to a minimum of Rs. 860 per month.
Above Rs. 5740	15 per cent of the 'Pay' shall be the basic family pension plus 15 per cent of the allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall be subject to a minimum of Rs. 1150 per month and a maximum of Rs. 2400 per month.

Notes: (1) Dearness relief is not payable on additional family pension.

(2) "Scale of pay" for the purpose of calculation of family pension as above shall be aggregate of "pay" as defined in sub-clause (o) of rule 2 and "allowances" as defined in the explanation to sub-rule (3) of rule 35.

[F.No. 2 (4)-Ins.III/94-(i)]

C. S. RAO, Jr. Secy.

Explanatory Memorandum.—The Life Insurance Corporation of India was established under section 3 of the Life Insurance Corporation Act, 1956. The terms and conditions of service of the employees of the Corporation are governed by rules made by the Central Government under section 48 and regulations made by the Corporation under section 49 of the said Act.

The rules and regulations under section 48 and section 49 of the Act do not provide for payment of pension except for the transferred employees of the Oriental Government Security Life Assurance Company Limited.

There has been persistent demand from the employees of the Corporation for introduction of a pension scheme in the Corporation. The Corporation in consultation with the Unions of the employees have recommended introduction of an index-linked pension scheme in lieu of Corporation's contribution to the Provident Fund with effect from 1st November, 1993.

The proposed pension scheme will be applicable to those who joined the service of the Corporation on or after 1-11-1993. However the benefit of the pension scheme is proposed to be extended to those who retired or died on or after 1-1-1986. It is also proposed to provide the benefit of family pension in respect of those employees who died subject to fulfilling certain conditions. It is certified that no employee of the Corporation is likely to be affected adversely by the introduction of the pension scheme with retrospective effect.